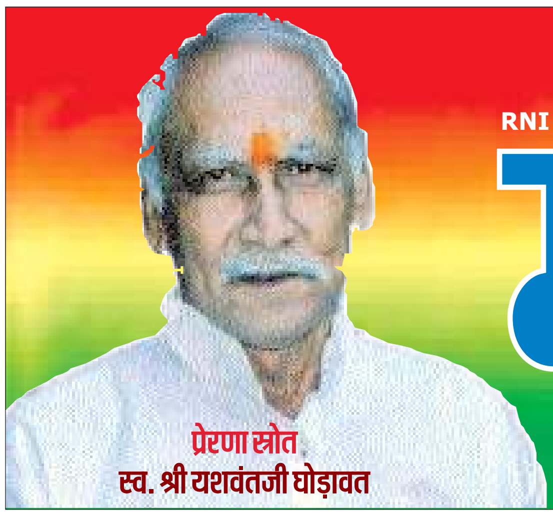

RNI No. MPHIN/2018/76422

माही की गूंज

बेबाकी के साथ..सच

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

अगर आप रेत पर कदमों के निशान छोड़ना चाहते हैं तो एक ही उपाय है, कदम पीछे मत खीचिए
एपीजे अब्दुल कलाम

वर्ष-02, अंक-45 (साप्ताहिक) | खवासा, गुरुवार 13 अगस्त 2020 | पृष्ठ-8, मूल्य-5 रुपए

कोरोना संक्रमण से आजादी की दरकार

माही की गूंज, संजय भटेवरा

देश अपना स्वाधीनता दिवस मनाने जा रहा है आजादी अपने आठवें दशक में चल रही है, इस दौरान देश ने कई उपलब्धियां हासिल की, विभिन्न मोर्चों पर विश्व के कई देशों ने भारत का लोहा माना है। विश्व में मार्गदर्शक के रुप में भी कई बार भारत को स्वीकार किया गया है, देश और विदेशों में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल करने के बावजूद आज विश्व सहित भारत भी एक सूक्ष्म भय के वातावरण में मनाया जा रहा है। अदृश्य वायरस का भय भले ही भौतिक रूप से हमें जश्न में शामिल नहीं होने दे रहा है लेकिन लोगों के उत्साह को कम नहीं कर सकता है। आजाद भारत के इतिहास में कई मामलो मैं यह स्वाधीनता दिवस महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस वर्ष बहुप्रतीक्षित राम मंदिर का शिलान्यास भी 5 अगस्त को हो चुका है एक तरह से कश्मीर में 370 से आजादी के साथ ही राम मंदिर के शिलान्यास में अगस्त के महिने में स्वाधीनता दिवस की गरिमा में चार चांद लगा दिए हैं।

ओर अदृश्य वायरस के खिलाफपिछले 6 महीनों से लड़ रहा है। इस लड़ाई के दौरान देश ने जिस एकता, धैर्य और साहस का परिचय दिया निश्चय ही वह काबिले तारीफहै, एक और जहां आम जनता ने धैर्य और साहस का परिचय दिया वहीं दूसरी ओर कोरोना वॉरियर्स (डॉक्टर, पुलिस और सफाईकर्मी व स्वास्थ्य विभाग के स्टाफ) द्वारा इस अदृश्य वायरस के खिलाफअपनी जान हथेली पर रखकर जंग लड़ी जा रही है, निश्चय ही भारत सहित पूरा विश्व इस जंग में अवश्य ही विजय होगा लेकिन इस महामारी ने पूरे विश्व को इतना अवश्य ही बतला दिया है कि, विज्ञान कितनी ही प्रगति कर ले लेकिन प्रकृति तो प्रकृति है उसे चैलेंज नहीं किया जा सकता है प्रकृति के सम्मुख विज्ञान की प्रगति तुच्छ है। वर्ष 2019 में आजादी का जश्न अनुछेद 370 के हटने का मनाया गया था तमाम दावों प्रतिदावों के बीच आज कश्मीर की वादियों में शक्ति की नई इबारत लिखी जा रही है लेकिन 2020 की आजादी का यह जश्न भी इतिहास में पहली बार सादगी पुर्ण और लेकिन आज हमें कोरोना संक्रमण से आजादी की दरकार है पिछले 6 महीनों से देश में इस महामारी के खिलाफ जो जज्बा दिखाया है वह निश्चय ही काबिले तारीफहै, लेकिन अपनी असली जंग की शुरुआत अब हुई है इस संक्रमण को हमें जड़ से खत्म करना है साथ ही सामुदायिक संक्रमण बनने से रोकना भी है अनलॉक होने के बाद इस महामारी ने गांवों में भी पैर पसारना शुरू कर दिया है और हमें अब इसके खिलाफ ज्यादा जागरूकता के साथ लड़ाई लड़ना है, सामाजिक दूरी के नियम का सख्ती के साथ स्वैच्छिक रूप से पालन करना अनिवार्य होगा साथ ही सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन करना भी आवश्यक है। भले ही 2020 की शुरुआत महामारी के साथ हुई है और कई भयावह घटनाओं का साक्षी बना है लेकिन हमें उम्मीद है कि 15 अगस्त को आजादी की वर्षगांठ के साथ ही कोरोना महामारी के अंत की शुरुआत होगी और साल के अंत तक हम इस पर विजय पा लेंगे।

सुशांत की डायरी का राज आया सामने

अभिनेता ने की थी 2020 की बड़ी प्लानिंग, बनाना चाहते थे राइटर्स का पूल

फिल्मों की स्क्रिप्ट, बॉलीवुड, हॉलीवुड और कंपनी के बारे में लिखी थी डिटेल

मुंबई। सुशांत सिंह राजपूत की एक डायरी के कुछ पन्ने हमारे हाथ लगे हैं। इन पन्नों को देख ऐसा लग रहा है कि सुशांत ने आने वाले समय के लिए एक लंबी प्लानिंग की थी। इन पन्नों में सुशांत ने साल 2020 में करने वाले कामों को लिखा था। सुशांत ने इनमें से एक पन्ने पर लिखा था, ठमैं चाहता हूं कि लोग मुझे समझें। इन पन्नों में सुशांत ने अपनी बहन प्रियंका का नाम भी लिखा है।

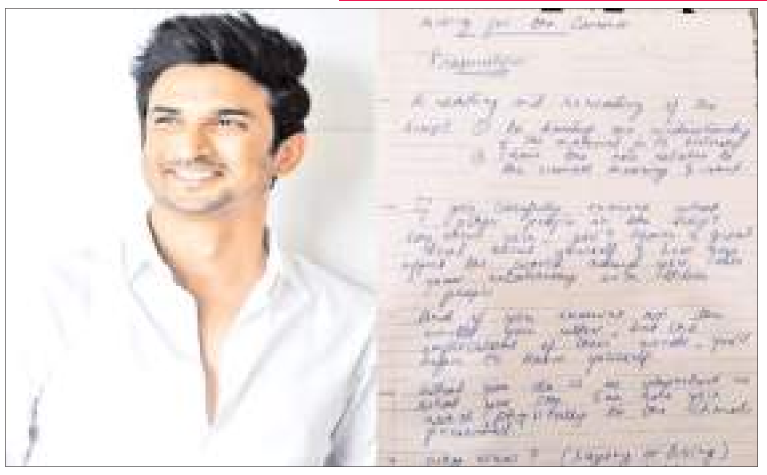

इन पन्नों में सुशांत ने फ्लो चार्ट बनाकर अपनी जरूरत और पब्लिक प्रेजेंस का खाका खींचा था। डायरी के यह पन्ने देख अब सवाल उठ रहे हैं कि जो शख्स इतनी लंबी प्लानिंग कर रहा था, वह कैसे सुसाइड कर सकता है? डायरी के इन पन्नों में सुशांत ने अपनी फिल्मों की स्क्रिप्ट, बॉलीवुड, हॉलीवुड और कंपनी के बारे में लिखा है। सीन को प्रभावशाली बनाने के लिए क्या एक्सपेरीमेंट और मैथड इस्तेमाल करने चाहिए और सुशांत कैसे इसकी तैयारी करेंगे, यह भी इन पन्नों में लिखा गया है।

राइटर्स का एक पूल बनाना चाहते सुशांत

डायरी के पन्नों को देख ऐसा लगता है कि सुशांत सिंह राजपूत फिल्म इंडस्ट्री में राइटर्स का एक पूल बनाना चाहते थे ताकि अच्छे राइटर्स के जरिए अच्छी स्क्रिप्ट्स सामने आएं। इसके साथ ही इसमें ये भी प्लान है कि कैसे फिल्मों को आगे ले जाया जाए। डायरी के इन पन्नों में सुशांत ने अपनी हॉलीवुड जाने की पूरी प्लानिंग लिखी थी। इसके अलावा स्टार्टअप में निवेश की बात, परिवार के किस सदस्य को क्या जिम्मेदारी देनी है यह बातें और कंपनी को किस ऊंचाई तक ले जाना है, यह लिखा था। डायरी के इन पन्नों में सुशांत ने लिखा है कि उन्हें अपने एक्टिंग करियर को संवारने के लिए अपने ऊपर क्या काम करना चाहिए। इसमें आगे उन्होंने लिखा है कि कम के दौरान क्या-क्या परेशानियां हो सकती हैं? सुशांत ने लिखा कि आप जो कहते हैं वह उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना आप करते हैं। डायरी के पन्नों में सुशांत ने अपनी बहन प्रियंका का भी नाम लिखा है और यह कहा है कि वह इस टीम को हैंडल करेंगे। सुशांत ने लिखा है कि अपनी लाइन को याद मत करो, उन्हें महसूस करो और फिर उसे कैमरे के सामने बोल दो।

रिया ने भी जारी किया था डायरी का एक पेज

इससे पहले रिया चक्रवर्ती के वकील की तरफ से सोशल मीडिया पर एक डायरी का पन्ना वायरल किया गया था, जिसमें सुशांत की हैंडराइटिंग में रिया के परिवार वालों के लिए तारीफ लिखी नजर आ रही थी। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे इस पन्ने पर सबसे ऊपर लिखा है आभार सूची जिसके बाद कई लोगों का सुशांत ने आभार व्यक्त किया, जिनमें रिया चक्रवर्ती के परिवार वालों के नाम थे।

कोरोना पर भारी कृष्ण भक्ति, ब्रज का कोना-कोना कृष्णमय

मथुरा। कोविड-19 की महामारी से भले ही ब्रज में जन्माष्टमी की रौनक फीकी करने का प्रयास किया, लेकिन ब्रजवासियों ने इस महान पर्व को इतनी भक्ति और श्रद्धा से मनाया कि, ब्रज का कोना-कोना कृष्णमय हो उठा।

कोविड-19 की गाइडलाईन के कारण भंडारों का आयोजन नही किया गया मगर मुख्य चौराहों को बिजली की सजावट से नया क्लेवर देने का प्रयास किया। उक्त सक्रमण के चलते भक्तों का मंदिरों में प्रवेश वर्जित था, लेकिन मंदिरों के अन्दर यह पर्व पूरे जोश खरोश से मनाया गया। वृन्दावन के राधा दामोदर मंदिर, शाहजी मंदिर एवं राधारमण मन्दिर में दिन में ही जन्माष्टमी मनाने की परंपरा है। अभिषेक शुरू होने के पहले वैदिक मंत्रों की प्रतिध्वनि के बीच सेवायतों का समूह जब मिट्टी के घड़ों में यमुना जल लेकर मन्दिर में प्रवेश करने लगा तो राधा-रमणलाल के जयकारों से गूंजयमान हो गया। चार घंटे से अधिक समय तक चले अभिषेक में 27 मन दूध, दही, खंडसारी, शहद, घी और जड़ी बूटियों से एक ओर अभिषेक चल रहा था, चरणामृत की मोटी धार से ठाकुर का अभिषेक हो रहा था तो दूसरी ओर घंटे, घड़ियाल और शंखध्चनि के मध्य वैदिक मंत्रो के पाठ से मंदिर और आसपास का वातावरण धार्मिकता से भर गया था। जन्माष्टमी की भोर होते ही श्रीकृष्ण जन्मस्थान समेत ब्रज के मंदिरों में शहनाई और नगाड़े बज उठे, शहनाई की आवाज सुनते ही ब्रजवासी भाव-विभोर होकर नृत्य करने लग गए। महाबन और गोवर्धन के मन्दिरों में भी ठाकुर का अभिषेक भक्तों की अनुपस्थिति में हुआ। मुकुट मुखारबिन्द मन्दिर गोवर्धन के रिसीवर रमाकांत गोस्वामी ने बताया कि, श्रद्धालुओं की अनुपस्थिति में भी मन्दिर में ठाकुर का अभिषेक कई मन दूध, दही, खंडसारी, घी, शहद एवं जड़ीबूटियों से किया गया। ब्रजवासियों ने मन्दिर बन्द होने के कारण अपने-अपने घरों में कान्हा की झांकी सजाकर जन्माष्टमी मनाई तथा ब्रज का कोना-कोना कृष्ण भक्ति के गीतों से गूंजता रहा।

आतंकवादियों के 3 सहयोगियों को किया गिरफ्तार, 5 लाख रुपए बरामद

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने तीन आतंकवादियों के सहयोगियों को गिरफ्तार किया है। वे कश्मीर के उत्तरी जिलों में अलग-अलग आतंकवादी संगठनों के साथ टेरर फंडिंग एक्टिविटी में शामिल थे, इनके पास से 5 लाख रुपए बरामद किए गए है। बांदीपोरा के एसपी राहुल मलिक ने बताया कि, पुलिस ने अब तक 5 लाख बरामद किए गए हैं। उन्होनें बताया कि, यह उत्तरी कश्मीर में आतंकियों के वित्तपोषण में शामिल थे। यह भी एसपी ने कहा कि, उन्होंने कश्मीर के उत्तरी हिस्सों में आतंकवादी गतिविधियों में भी 9 लाख रुपए खर्च किए है। इनके खिलाफसंबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और अभी भी जांच जारी है।

पूर्व मंत्री बृजेन्द्र सिंह का आरोप, सैनिटाइजर की कर चोरी मामले में व्यापारी जेल में पर अधिकारी पर कार्रवाई क्यों नही

मिली भगत से बेची जा रही एमआरपी से ऊंचे दामों पर शराब

भोपाल

कांग्रेस विधायक एवं पूर्व मंत्री बृजेन्द्र सिंह राठौर ने कहा है कि प्रदेश सरकार और शराब ठेकेदारों की मिलीभगत से एमआरपी से अधिक दामों पर शराब बेची जा रही है। ये पैसा कहां जा रहा है? उन्होंने कहा कि सैनिटाइजर की कर चोरी में एक व्यापारी को तो सरकार ने जेल में डाल दिया लेकिन इसमें किसी अधिकारी की कोई जवाबदेही तय क्यों नहीं की गई और उन कार्यवाही क्यों नहीं की गई? ये आरोप बृजेन्द्र सिंह सिंह ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में प्रदेश सरकार पर लगाए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में जब कांग्रेस की सरकार थी उस समय ठेकेदारों को शराब की जो दुकानें आवंटित की गई थी, उनमें से 70 प्रतिशत ठेकेदार दुकानों को छोड़ चुके हैं। कांग्रेस सरकार ने जो नीति बनाई थी उस नीति को खत्म करने की नियत से भाजपा सरकार ने कई बार आबकारी नीति में संशोधन करने के प्रयास किए। तीन बार टेंडर रोक दिए गए। तीनों बार शराब ठेकेदारों को भाजपा सरकार द्वारा बनाई गई नीति का लाभ नहीं मिला। जिस कारण खर्च की गई राशि का भी नुकसान ठेकेदारों को झेलना पड़ा है। कांग्रेस सरकार द्वारा बनाई गई आबकारी नीति को ही प्रदेश में लागू करना पड़ा जिसके चलते ठेकेदारों ने दुकानें कब्जे में ले ली और नए सिरे से दुकानें खोलकर शराब की बिक्री मनमाने दामों पर शुरू कर दी हैं। लिखित जानकारी वाणिज्य कर मंत्री सहित आबकारी विभाग के आला अधिकारियों को भी दी गई है।

एमआरपी से अधिक दर पर शराब बेचने के मामलों में कार्रवाई होगी

वाणिज्यिक कर, वित्त, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी मंत्री जगदीश देवड़ा ने बताया है कि ठेकेदारों द्वारा एमआरपी से अधिक दर पर मदिरा विक्रय करने की कोई शिकायत उपभोक्ता द्वारा किए जाने पर संबंधित ठेकेदार के विरुद्ध जांच कर कठोर कार्यवाही की जाए। मंत्री देवड़ा ने कहा है कि राज्य सरकार द्वारा कोरोना कंट्रोल करने के लिए भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों के तहत मदिरा दुकानें बंद करने के आदेश जारी किए गए थे। साथ ही विभिन्न जिलों में स्थानीय परिस्थितियों के मद्देनजर कलेक्टर्स द्वारा विभिन्न समयों में मदिरा दुकानें बंद करने के आदेश जारी किए गए।

नहीं हो रही कारवाई

आज संपूर्ण प्रदेश में मदिरा दुकानों पर उपरोक्त नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है। इसके प्रमाण मेरे पास उपलब्ध हैं, परंतु आबकारी विभाग कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है।

एक तरह से जनता की जेब काटी जा रही है और शासन को चूना लगाया जा रहा है इसका क्या कारण है इसे सरकार को स्पष्ट करना चाहिए?

वहीं सेनेटाईजर की कर चोरी में एक व्यापारी को तो आपने जेल में डाल दिया लेकिन इसमें किसी अधिकारी की कोई जवाबदेही तय क्यों नहीं की गई और उन कार्रवाई क्यों नहीं की गई?

राठौर ने मांग की कि सरकार बताए, आज तक इस संबंध में कितने प्रकरण कायम किए गए हैं? और इन प्रकरणों पर क्या कार्रवाई की गई है? क्या यह गंभीर आर्थिक अपराध नहीं है?

मैं अनियमितताओं पर तुरंत कार्रवाई की अपेक्षा करता हूं। कार्रवाई नहीं होने की दशा में आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगी।

वसूली मामा, वसूली बंद कर ट्रांसपोर्टरों की समस्या का जल्द से जल्द करें समाधान

भोपाल। प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री सज्जन सिंह वर्मा ने ट्रांसपोर्टरों द्वारा बुलाई गई 3 दिन की हड़ताल पर शिवराज सरकार को निशाने पर लिया। वर्मा ने कहा कि प्रदेश सरकार सो रही है, कोरोना में खुद को

क्वारैंटाइन कर रखा है और प्रदेश की जनता त्राहि-त्राहि कर रही है। प्रदेश के परिवहन मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत जिन्हें इस समस्या को हल कर हड़ताल जैसी नौबत नहीं आने देना थी, वह अपनी खुद की भलाई में लगे हुए हैं। पहले प्रदेश की जन हितैषी कांग्रेस सरकार को अपने स्वार्थ के लिए धोखा दिया और अब प्रदेश के ट्रांसपोर्टरों से जबरिया वसूली कर प्रदेश की जनता को महंगाई से मरने को छोड़ रहे हैं। प्रदेश के मुखिया को चाहिए कि वह ट्रांसपोर्टरों के साथ बैठकर उनकी बात सुने तथा उनकी समस्याओं का निराकरण करें।

मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री निशंक ने की वेबिनार में भागीदारी

नई शिक्षा नीति का मध्यप्रदेश में होगा आदर्श क्रियान्वयन

स्वास्थ्य क्षेत्र में व्यवस्थाएं की जाएंगी और अधिक मजबूत

भोपाल

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि जिस तरह मध्यप्रदेश ने बीते वर्षों में बिजली, पानी और कृषि के क्षेत्र में विकास के नए रिकार्ड बनाए हैं, उसी तरह अब स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ उपलब्धियां प्राप्त करने के प्रयास होंगे। मुख्यमंत्री चौहान आज आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के रोडमैप निर्माण के लिए वेबिनार श्रृंखला के माध्यम से किए जा रहे मंथन के तीसरे दिन स्वास्थ्य और शिक्षा वेबिनार का शुभारंभ कर रहे थे। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के निर्देशन में भारत की नई शिक्षा नीति के तीन प्रमुख उद्देश्यों ज्ञान-कौशल और संस्कार को प्राप्त करने के सोच से तैयार की गई है। मध्यप्रदेश इसका आदर्श तरीके से क्रियान्वयन करेगा। स्वास्थ्य क्षेत्र में भी आयुष्मान भारत योजना में नया सहारा दिया है।

यह योजना मार्गदर्शक सिद्ध हो रही है। मध्यप्रदेश में दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने का कार्य किया जाएगा। मुख्यमंत्री चौहान ने बताया कि तकनीकि शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश में 600 करोड़ की लागत से सिंगापुर के सहयोग से ग्लोबल स्किल पार्क के विकास की योजना है। इसके क्रियान्वयन की गति बढ़ाई जाएगी। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की प्राप्ति के लिए नीति आयोग के निर्देशन में इस वेबिनार श्रृंखला के माध्यम से रोडमैप तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है। तीन वर्ष में विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जाएगा।

स्वास्थ्य — 13 नए मेडिकल कॉलेज खोलने की पहल

- पहला सुख निरोगी काया है। स्वास्थ्य ही व्यक्ति को जीवन देता है।
- राज्य सरकार ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी व्यवस्थाएं बनाई है। शासकीय अस्पताल चिकित्सक विहीन न हो, इसके प्रयास किए गए। चिकित्सकों की कमी को दूर करने का कार्य हुआ है।
- जांच और उपचार की व्यवस्थाएं बढ़ाई गई है।
- कोरोना काल में अनेक स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर बनाने के गत चार माह में निरंतर प्रयास हुए हैं।
- एम्बुलेंस सेवाएं बेहतर बनाने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास जारी रहेंगे।
- स्वास्थ्य सुधारों के सुधार पर ध्यान दिया जाए। शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर में कमी आए।
- प्रदेश के शासकीय अस्पताल विशेष रुप से जिला अस्पताल पूर्ण सक्षम हों। रोगी को रेफर करने की जरूरत न हो।
- प्रदेश में 13 नए मेडिकल कॉलेज खोलने की पहल की गई। नए प्रारंभ मेडिकल कॉलेजों से जनता को सुविधा प्राप्त हुई है।
- डॉक्टर्स के साथ पैरामेडिकल स्टाफ की कमी दूर हो। यह भी पूरे प्रयास किए जा रहे हैं। जांच की व्यवस्था साथ ही उपकरण को ऑपरेट करने के लिए ऑपरेटर भी हो, तभी स्वास्थ्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर मप्र का लक्ष्य पूरा होगा।

शिक्षा — कौशल ज्ञान देंगे

- केंद्र सरकार द्वारा घोषित नई शिक्षा नीति का मध्यप्रदेश में आदर्श क्रियान्वयन करेंगे।
- मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि किताबी ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को कौशल भी मिले यह लक्ष्य है।
- शिक्षा को विश्वस्तरीय बनाने पर ध्यान देंगे। नई शिक्षा नीति के आलोक में केन्द्रीय मंत्री निशंक को आश्वस्त करता हूं कि मध्यप्रदेश में प्रभावी क्रियान्वयन होगा।
- शिक्षा सर्व सुलभ हो, हर बच्चा स्कूल जाए लेकिन बच्चों पर बस्ते का बोझ न हो, उनका बोझ घटे, यह लक्ष्य है।
- नए स्कूल खोलने फैशन बढ़ गया है, नगण्य विद्यार्थी संख्या के बावजूद विद्यालय प्रारंभ करना उचित नहीं।
- कोरोना काल में 'हमारा घर-हमारा विद्यालय' के अंतर्गत बच्चों को घर बैठे सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पहुंचाई गई।
- प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप मध्यप्रदेश में विद्यार्थियों को कौशल ज्ञान भी दिया जाएगा।
- नैतिक शिक्षा पर भी हम पर्याप्त ध्यान देंगे। पूर्व में नैतिक शिक्षा पर जोर दिया जाता रहा है। इसे पुनः महत्व दिया जाएगा।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय तक जाने के लिए सड़क हो, परिवहन साधन भी हो, पर्याप्त स्टाफ हो और लेबोरेटरी भी हो, इस पर ध्यान देंगे।
- व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत कक्षा छठवीं से बच्चों के हाथ में कौशल मिले, यह प्रयास होंगे।
- संगीत नृत्य और योग की शिक्षा देना भी प्राथमिकता होगी।
- यदि किसी विषय में विशेषज्ञता अर्जित करना तब ही पीजी कक्षा में प्रवेश लें विद्यार्थी। सिर्फ फैशन के लिए मास्टर डिग्री ज्वाइन न करें।

नाथ के सड़क पर उतरने की धमकी पर मिश्रा का पलटवार

कभी जनता के दिल में उतरने की बात करो

भोपाल

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के सड़क पर उतरने के बयान पर गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि कभी जनता के दिल में उतरने की बात करो। छिंदवाड़ा के बाहर भी संसार है, पूरी पार्टी ही सड़क पर ला दी है। जिस विषय को लेकर कमलनाथ सड़कों पर आने की बात कर रहे हैं, उसमें जिस पूर्व मंत्री पर केस दर्ज हुआ है- क्या वो झूठा है, ये बताएं वो...? एक भी कांग्रेस का कार्यकर्ता हो, जिस पर झूठा केस दर्ज हो? मुझसे पूछो कैसे लगाए जाते हैं झूठे केस। मैं चश्मदीद हूं, 15 महीने की सरकार में आपने कैसे झूठे केस लगाए थे। नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस अब रोजगार का मुद्दा उठा रही है, लेकिन वह ये बताएं कि 15 महीनों में क्या किसी एक को भी रोजगार दिया? कांग्रेस के घोषणा पत्र में था, रोजगार देने का क्या हुआ उसका? कांग्रेस के घोषणा पत्र में था डीजल के दाम कम करेंगे, रोजगार देंगे, नौजवानों को भत्ता देंगे? लेकिन 15 महीने में सिर्फ घोषणाएं ही होती रहीं।

गरीबों को मुफ्त इलाज देती रहेगी सरकार: मिश्रा ने आइसोलेशन और पेड क्वारैंटाइन पर कहा कि गरीब तबके और निम्न वर्ग के लिए सरकार मुफ्त में इलाज देती रहेगी लेकिन सक्षम लोगों को शर्तों के साथ पेड आइसोलेशन और पेड क्वारैंटाइन की व्यवस्था की जाएगी।

गृहमंत्री का अलग अंदाज, मास्क पहनने पर नहीं छुपा चेहरा

भोपाल। मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने अपने नए अंदाज से सबको चौंका दिया। इस मास्क में गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा की असली मूंछों की तरह ही फोटो वाली मूंछें भी बनाई गई हैं इसलिए मास्क पहनने के बाद भी उनकी मूंछें छुपती नहीं है ये मास्क गृह मंत्री की फोटो को प्रिंट कर बनाया गया है जिसमें नरोत्तम मिश्रा का हंसता हुआ चेहरा है इसे पहनने के बाद सामने बैठे शख्स को लगेगा ही नहीं कि नरोत्तम मिश्रा के चेहरे पर कुछ है। उन्होंने लोगों से भी मास्क पहनने की अपील की है।

जैसा काम वैसी कार्रवाई

मध्यप्रदेश के इंदौर में कांग्रेस के राऊ विधायक और पूर्व मंत्री जीतू पटवारी द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आपत्तिजनक तस्वीर शेयर करने के मामले में गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा का बड़ा बयान दिया है। मिश्रा ने कहा है कि जैसा कृत्य जीतू पटवारी ने किया है वैसी कार्रवाई इंदौर पुलिस कर रही है। प्रदेश में अब तक पुलिस वालों कोई भी झूठी एफआईआर दर्ज नहीं हुई है।

2011 से जॉबकार्ड बनाकर मनरेगा में मजदूरी कर रही है आंगनवाडी सहायिका

ऑनलाईन दर्ज जाबकार्ड में लगे हैं फर्जी फोटो, मजदूरी घोटाले का यह बडा मामला उजागर

माही की गूंज, पेटलावद, राकेश गेहलोत

ग्राम पंचायतो में फैले भ्रस्टाचार पर कोई बड़ी कार्यवाही नही होने से भ्रष्ट पंचायतों के सरपंच, सचिव ओर रोजगार सहायकों पर भ्रस्टाचार की कोई लगाम नही होने से बेलगाम होकर अपनी-अपनी पंचायतों में जमकर भ्रस्टाचार कर रहे हैं, विकास खण्ड पेटलावद की ग्राम पंचायत असालिया के कई भ्रस्टाचार उजागर हो चुके है। लेकिन इस बार एक ऐसा मामला उजागर हुआ है जिससे ग्राम पंचायतों में हो रहे भ्रष्टाचार की इबारतो का खुलासा गूंज कर रहा है। ग्राम पंचायत असालिया के खेड़ा फलिया स्थित आँगनवाडी पर पदस्थ सहायिका के पद पर कार्यरत महिला और उसके पति के नाम से मनरेगा के कार्यो में फर्जी हाजरी भरकर लाखों रुपए आहरण कर लिए। महिला ग्राम पंचायत में पदस्थ सहायक सचिव की भाभी है जिसका नाम भी सहायक सचिव भाई के जाबकार्ड में दर्ज है। जाबकार्ड में दो नाम दर्ज है और दोनों के नाम से वर्ष 2011 से मनरेगा के कार्यो में जाबकार्ड लगा कर मजदूरी का आहरण किया जा रहा हैं। सहायक सचिव की भाभी ग्राम असालिया के ही खेड़ा फलिये में स्थित आंगनवाड़ी में सहायिका के पद पर कार्यरत हैं जो लगातार आँगनवाड़ी में उपस्थिती बताकर विभाग से वेतन प्राप्त कर रही हैं। मामला तब उजागर हुआ जब गाँव के कुछ युवाओं ने ऑनलाईन मनरेगा के आंकड़े जांचे जिसमे सहायिका के नाम से 2011 से मजदूरी के भुगतान की जानकारी मिली। महिला ने सहायिका के पद पर पदस्थ होते हुए 2011 से ग्राम पंचायत के मनरेगा के कार्यो में तालाब निर्माण, कपिलधारा कूप, सुदर सड़क जैसे कई कार्यो में मजदूरी करती हैं दर्शाए रखा है।

जाबकार्ड में फर्जी फोटो किए अपलोड

ग्राम पंचायत असालिया ने मजदूरी करने के लिए जारी जाबकार्ड में भी फर्जीवाडा करके हेराफेरी की गई, सम्भव है ऐसा एक मामला नही होगा। जिस जाबकार्ड क्रमांक एमपी-21-002-024-001/286-सी जिसका रजिस्ट्रेशन वर्ष 2011 में हुआ है, जब से लगातार ग्राम पंचायत के मनरेगा के कार्यो में मजदूरी के भुगतान के लिए यह जॉबकार्ड उपयोग किया जा रहा है। जिस जॉबकार्ड का उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया गया उस पर नाम और फोटो दोनों अलग-अलग है, जॉबकार्ड में नाम सहायक सचिव के भाई और भाभी के दर्ज है, जबकि फोटो नाम से अलग दूसरे के लगे हुए हैं। इतने बड़े फर्जीवाड़े की जानकारी में आने के बाद अधिकारी इस मामले में कार्यवाही करते हैं या पहले की तरह इस बड़े मामले में लेन-देन कर दबा दिया जाता है, यह आगे देखने का विषय है।

पेटलावद बैंक ऑफ इंडिया की महिला कर्मचारी के सास-ससुर थांदला में कोरोना पॉजिटिव

माही की गूंज, पेटलावद,

बैंक ऑफइंडिया पेटलावद की एक महिला कर्मचारी के सास-ससुर थांदला में कोरोना पॉजिटिव पाए गए है, जिससे पेटलावद शाखा में भी संक्रमण फैलने का भय पैदा हो गया है।

क्योकि महिला कर्मचारी शुक्रवार को शाखा में कार्यरत थी, जिसके चलते बैंक में समस्त कर्मचारियों एवं आने-जाने वाले ग्राहकों में संक्रमण फैलने का खतरा बढ़ चुका है। ऐसी स्थिति में सभी कर्मचारियों एवं ग्राहकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए शाखा के समस्त कार्यो को अगले सोमवार यानी 17 अगस्त तक स्थगित करने हेतु बैंक ऑफइंडिया के शाखा प्रबंधक के द्वारा 10 अगस्त को पेटलावद एसडीएम से अनुमति मांगी गई थी, जिसके चलते एसडीएम

सात दिन के लिए बैंक के कार्य स्थगित करने की मांग

पेटलावद के द्वारा एक आदेश जारी किया गया है, जिसमें बताया गया कि, बैंक ऑफ इंडिया पेटलावद में महिला कर्मचारी जोकि थांदला स्थित सास-ससुर दोनों कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं, उक्त महिला कर्मचारी शुक्रवार को शाखा में कार्यरत थी संभवत शाखा में संक्रमण फैलने का भय पैदा हो गया है। किन्तु ग्राहक सेवा कार्यों को स्थगित करने का प्रावधान नहीं है, परंतु कोरोना संक्रमण से सुरक्षा के मद्देनजर बैंकिंग करेस्पांडेंस की नियुक्ति की जाकर ग्राम पंचायत मुख्यालय के आमजन को बैंकिंग सुविधा प्रदान करें, ताकि बैंक कर्मचारी/अधिकारी तथा आमजन को सोशल डिस्टेंस का पालन कराते हुए बैंकिंग सुविधा का लाभ दिया जा सके।

बिना किसी बड़े आयोजन के समिति सदस्यों के साथ नगर भृमण को निकले नीलकंठेश्वर महादेव

माही की गूंज , पेटलावद

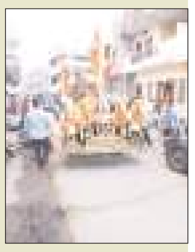

कोविड-19 कोरोना संक्रमण के चलते एक के बाद एक आयोजन कोरोना की भेंट चढ़ चुके है, वर्षो लाव लश्कर के साथ नगर में नीलकंठेश्वर महादेव भृमण की परम्परा भी इस बार कोरोना के कहर के कारण टूट गई, नीलकंठेश्वर महादेव की नगर भृमण यात्रा इस बार केवल समिति के सदस्यों के साथ निकली गई और नगरवासियों ने घर से यात्रा के दर्शन कर धर्म लाभ लिया , प्रति वर्ष सावन के अंतिम सोमवार के बाद आने वाले सोमवार को निकाली जाने वाली शाही सवारी इस बार साधारण समारोह के बिना किसी बड़े आयोजन के निकाली गई , नीलकंठेश्वर महादेव को बग्घी में बिठाकर समिति के सदस्यों ने नगर भृमण करवाया गया , कोरोना के चलते लोगो ने समझदारी ओर सहयोग करते हुवे किसी प्रकार से यात्रा में शामिल नही होकर घर से ही दर्शन कर आशीर्वाद लिया । पूरे आयोजन में गौतम ग्रुप पेटलावद का विशेष योगदान रहा।

पीएम किसान योजना के तहत साढ़े 8 करोड़ किसानों के खातों में भेजे गए 17 हजार करोड़ रुपए, दौ हजार रुपये की छठी किस्त जारी

माही की गूंज, झाबुआ

रविवार को साढ़े 8 करोड़ किसानों के खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम किसान) योजना के तहत 2 हजार रुपए की छठी किस्त जारी की। साढ़े 8 करोड़ किसानों के खातों में 17 हजार करोड़ रुपए ट्रांसफर किए गए। इसके साथ ही पीएम मोदी ने 1 लाख करोड़ रुपए की वित्त पोषण सुविधा का शुभारंभ किया। बता दे कि पीएम किसान योजना के तहत सभी पात्र किसान परिवारों को सालाना 6 हजार रुपए की राशि दी जाना है। इस योजना की शुरुआत से अब तक लगभग 10 करोड़ किसानों को इसका फायदा मिला है। इस किस्त के बाद अब तक किसानों को करीब 92 हजार करोड़ रुपए भेजे जा चुके हैं। यह मदद एक वर्ष में 2-2 हजार रुपये की तीन किस्त के जरिए दी जाती है। इस स्कीम की अनौपचारिक शुरुआत 1 दिसंबर 2018 को हुई थी, यह योजना कोविड-19 महामारी के दौरान किसानों के लिए बड़ा सहारा बनकर उभरी, लॉकडाउन में ही करीब 20 हजार करोड़ रुपये भेजे गए।

झाबुआ जिलें में पीएम किसान सम्मान निधि की स्थिति

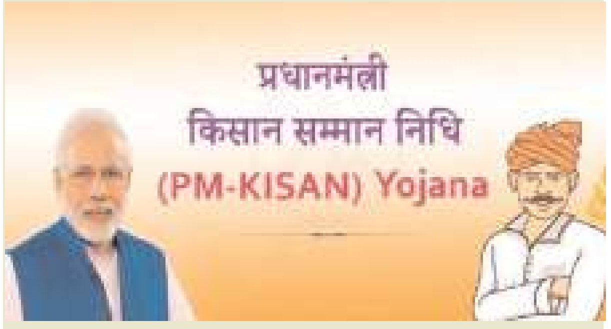

जिलें में विभाग द्वारा किसानों का रजिस्ट्रैशन करते वक्त काफी गडबडी हुई। नाम, अकाउंट नम्बर, आईएफसी कोड सही से पोर्टल पर दर्ज नही हो पाने के कारण कई किसान आज भी पीएम किसान सम्मान निधि से वंचित है। किसान इस त्रुटि को सुधरवाने के लिए पटवारियों के चक्कर लगा रहे है। तो वही कई किसानों का आज तक पोर्टल पर रजिस्ट्रैशन नही हुआ है।

किसान इस तरह करा सकते है रजिस्ट्रैशन –किसान सीएससी कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से पोर्टल पर रजिस्ट्रैशन करा सकते है। इसके अलावा किसान आधार कार्ड, खसरा नकल, बैक पासबुक साथ ले जाकर सीधे सम्बन्धित हल्के के पटवारी से सम्पर्क कर किसान रजिस्ट्रैशन करवा सकता है।

संपादकीय

आत्मनिर्भर आजादी' का आह्वान

बीती नौ अगस्त को 'भारत छोड़ो आंदोलन' की 78वीं सालगिरह थी। 1942 में गांधी जी के नेतृत्व में आह्वान किया गया था कि अंग्रेज भारत को छोड़ कर चले जाएं, लेकिन 2020 में चीन को भारतीय बाजार से खदेड़ने का अभियान अब 'जन आंदोलन' बन चुका है। ऐसे ऐतिहासिक मौके पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्वदेशी हथियार और रक्षा उपकरण खुद ही बनाने का निर्णय सुनाया और परोक्ष रूप से 'आत्मनिर्भर आजादी' का आह्वान किया। भारत सरकार ने तय किया है कि 101 रक्षा उपकरणों और अस्त्रों के आयात पर पाबंदी थोपी जाएगी। यह प्रक्रिया दिसंबर, 2020 से शुरू होकर दिसंबर, 2025 में समाप्त होगी। यानी रक्षामंत्री चाहते हैं कि इन पांच सालों में रक्षा उद्योग की भारतीय कंपनियां पूरी तरह सक्षम हो जाएं, ताकि आयात पर पूरी तरह ढक्कन लगाया जा सके और अपने ही देश में उद्योग के एक और बाजार का विस्तार हो सके। देश को अर्थव्यवस्था के स्तर पर फायदा होगा और बेशक नए निर्माण, उत्पादन शुरू होंगे, तो रोजगार का बढ़ना भी स्वाभाविक है। सरकार ने इसके लिए 52,000 करोड़ रुपए के बजट का प्रावधान किया है। रक्षा मंत्री ने आश्वस्त किया है कि आने वाले 5-7 सालों में चार लाख करोड़ रुपए से ज्यादा के ऑर्डर भारतीय कंपनियों को दिए जाएंगे। यह भी स्पष्ट किया गया है कि अब हल्के लड़ाकू हेलीकॉप्टर, मालवाहक विमान, पारंपरिक पनडुब्बी, क्रूज मिसाइल के साथ-साथ रडार, ऑर्टिलरी गन, अपतटीय गश्ती जहाज, इलेक्ट्रॉनिक युद्धक प्रणाली, अगली पीढ़ी के मिसाइल पोत, फ्लोटिंग डॉक, कम दूरी के समुद्री टोही विमान, असॉल्ट राइफल आदि अस्त्र और युद्धक उपकरण देश में ही बनाए जाएंगे। अत्याधुनिक हथियारों, विमानों और युद्धक प्रणाली आदि के लिए हम रूस, अमरीका, फ्रांस और इजरायल आदि देशों के भरोसे रहे हैं। अब रक्षा मंत्री के जरिए भारत सरकार चाहती है कि डीआरडीओ सरीखे रक्षा संस्थानों ने जो तकनीक और क्षमताएं हासिल की हैं, उनके आधार पर ही 'स्वदेशी अस्त्र' बनाने की शुरुआत की जाए। धीरे-धीरे उत्पादन स्वदेशी होगा, तो प्रौद्योगिकी भी विकसित होती रहेगी। कमोबेश रक्षा उपकरणों के स्वदेशीकरण से हमारे अरबों रुपए बचेंगे, क्योंकि भारत हथियारों के बाजार में दुनिया के पहले तीन बड़े आयातक देशों में शामिल रहा है। बीते पांच सालों में ही 16 अरब डॉलर से अधिक का आयात किया जा चुका है। हम 70 फीसदी से अधिक हाईटेक रक्षा हार्डवेयर-विमान, समुद्री जहाज, पनडुब्बी और मिसाइल आदि-तो रूस, जापान, अमरीका और इजरायल आदि देशों से आयात करते हैं। कमोबेश आत्मनिर्भरता की कोई ठोस शुरुआत तो की जाए। बेशक रक्षा मंत्रालय का यह निर्णय बेहद महत्त्वपूर्ण और परिवर्तनकारी साबित हो सकता है। भारत हथियारों, अत्याधुनिक विमानों और उनके छोटे-छोटे उपकरणों तथा तकनीकों के लिए विदेशों का मोहताज रहा है। भारत रक्षा सामानों का आयातक ही नहीं, महत्त्वपूर्ण निर्यातक भी है। हम अमरीका, फ्रांस, जर्मनी और फिनलैंड, ऑस्ट्रेलिया, इजरायल और साउथ अफ्रीका समेत कुल 42 देशों को रक्षा उपकरण निर्यात भी करते हैं। बेशक ये उपकरण और मिसाइलें आदि अपेक्षाकृत छोटे होते हैं, लेकिन सेनाओं के लिए एक छोटा-सा हेलमेट भी 'कवच' के समान है। अब इस निर्यात को पांच अरब डॉलर तक बढ़ाने का लक्ष्य तय किया गया है। हालांकि 2005 में भारत ने अपनी जरूरत के हथियारों का 70 फीसदी हिस्सा देश में ही बनाने का लक्ष्य रखा था। अभी यह करीब 35 फीसदी तक ही पहुंच पाया है। यानी लक्ष्य का 50 फीसदी ही पूरा किया जा सका है। वर्ष 2010 से 2014 के दौरान विश्व हथियार आयात में भारत का हिस्सा करीब 15 फीसदी था। अब यह कुछ कम हुआ होगा! बहरहाल भारत की निगाहें और दृष्टि भविष्य के युद्ध पर टिकी होंगी, लिहाजा उसी के मद्देनजर सेनाओं में भी स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता की ठोस पहल की जा रही है। भारतीय रक्षा कंपनियों ने विमान बनाए हैं, डीआरडीओ ने ताकतवर मिसाइलों के परीक्षण कर देश को सशक्त किया है। भारतीय कंपनियां अनजान नहीं हैं। उन्हें बाजार की भी चिंता नहीं है, क्योंकि जो भी वे बनाएंगी, सरकार और सेना उसे खरीद लेंगी। फिर भी विशेषज्ञों का मानना है कि इस निर्णय को बहुत पहले ठोस रूप से लागू किया जाना चाहिए था, क्योंकि युद्ध के तरीके और आयाम बदल चुके हैं। भारत को रोबोट सरीखे कृत्रिम बौद्धिकता के युद्ध की तैयारी भी करनी चाहिए। फिर भी इस स्वदेशी कदम का हम स्वागत करते हैं। इस संदर्भ में विरोधियों की परवाह नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मामला राष्ट्रीय सुरक्षा का है।

समग्र क्रांति के अग्रदूत योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- नरेन्द्र सहगल

अधर्मियों, आतंकवादियों, समाजघातकों, देशद्रोहियों और भ्रष्टाचारियों को समाप्त करने के उद्देश्य से धराधाम पर अवतरित हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण जन्म से लेकर अंत तक अपने निर्धारित उद्देश्य के लिए सक्रिय रहे। वे एक आदर्श क्रांतिकारी थे। कृष्ण के जीवन की समस्त लीलाएं व क्रियाकलाप प्रत्येक मानव के लिए प्रेरणा देने वाले अदभुत प्रसंग हैं। इस संदर्भ में देखें तो श्रीकृष्ण का सारा जीवन ही कर्म क्षेत्र में उतरकर समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए निरंतर संघर्षरत रहने का अतुलनीय उदाहरण है। आदर्शोंध्सिद्धान्तों को व्यवहार में उतारने का दिशा निर्देश है।

योगेश्वर कृष्ण की जीवनयात्रा कंस के कारावास की कठोर कोठरी से प्रारम्भ होती है। जेल में यातनाएं सह रहे वासुदेव और देवकी की कोख से जन्म लेकर और फिर जेल के सीकचों को तोड़कर मुक्त होकर उन्होंने आतंकवाद और अधर्म के साथ युद्ध करने का बिगुल बजा दिया। जेल से मुक्त होकर नंदग्राम में सुरक्षित पहुंच जाने के समाचार से अत्याचारी शासक कंस और उसके मददगार सभी राक्षसी राजा भय से कांप उठे। नंदग्राम में माता यशोदा की गोद में खेल कर और बालसखाओं के साथ कृष्ण ने जो साहसिक लीलाएं कीं उनसे समाज-सेवा, सामाजिक समरसता, धर्म-रक्षण, नारी सशक्तिकरण और संगठन में शक्ति का दर्शन शास्त्र समाया हुआ है।

अन्याय के विरुद्ध संगठित सशस्त्र प्रतिकार

बाल सखाओं का संगठन बनाकर मक्खन की मटकियां फोड़ना, पूंजीवादी तानाशाह के विरुद्ध क्रांति का संकेत है। किसानों, मजदूरों द्वारा परिश्रमपूर्वक कमाया गया धन (मक्खन के मटके) कंस जैसे तानाशाहों (पूंजीपतियों) के घरों में जाते थे। कृष्ण की बाल सेना ने इस धन को रोक कर ग्रामवासियों में वितरित करने की प्रथा को जन्म दिया। इस लिए तो किसानों की पत्नियों, माताओं-बहनों (गोपियों) ने कृष्ण के इस कार्य को सदैव प्रेमपूर्वक स्वीकृति दी। बाल कृष्ण को ग्रामवासियों ने 'माखनचोर' कहकर अपना स्नेहिल आर्शीवाद भी दिया।

जब पूरे क्षेत्र में मूसलाधार वर्षा होने से घर परिवार पर संकट छाने लगा तो बाल कृष्ण ने अपनी हथेली पर गोवर्धन पर्वत को उठाकर सबको इसके नीचे शरण दी। इंद्र देवता के कथित आतंक से समाज को सुरक्षित करके कृष्ण ने यह संदेश दिया कि एक नेता के नेतृत्व में संगठित होकर प्रत्येक संकट से छुटकारा पाया जा सकता है। सामाजिक सुरक्षा का यही सर्वोत्तम मार्ग है। बाल सखाओं के संगठन के माध्यम से अनुशासन के महत्व को समझा दिया गया। बाल कृष्ण ने अपने सखाओं को सैनिक प्रशिक्षण, मलयुद्ध, गोपनीयता और अन्याय के विरुद्ध सशक्त प्रतिकार करना भी सिखाया। परिणाम स्वरूप कृष्ण के नेतृत्व में इन्हीं सैनिकों ने कंस, शिशुपाल, पूतना जैसे राक्षसी तानाशाहों का संहार करने में सफलता प्राप्त की। आम जनता का शोषण करने वाले इन अत्याचारी शासकोंध्असमाजिक एवं अराजक तत्वों को समाप्त करके कृष्ण ने सामाजिक भेद-भाव को समाप्त करने की आवश्यकता का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

गोपियों के संग रासलीला करने के प्रसंगों को भी अध्यात्मिक आधार पर नारी सशक्तिकरण और मातृशक्ति के संदर्भ में समझना चाहिए। गोपियों में अगुवा गोपी अर्थात नारी संगठन का नेतृत्व सम्भालने वाली गोपी राधा को शास्त्रों में श्रीकृष्ण की शक्ति कहा गया है। इसका अर्थ बहुत गहरा है। ईश्वरीय शक्ति श्रीकृष्ण को भी मातृशक्ति का सहारा लेना पड़ा। रासलीला तो नारी शक्ति को संगठित करने और दिशा देने का मार्ग मातृ था। इन रास लीलाओं में जाति, मजहब, क्षेत्र के लिए कोई स्थान नहीं था। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का संदेश था गोपियों के संग रासलीला के आध्यात्मिक आयोजनों में।

क्रांति का आधाररू बांसुरी और सुदर्शन चक्र

आज हम देखते हैं कि सेना में सैनिकों के प्रशिक्षण, अनुशासन, संचलन इत्यादि में 'बैंड' का बहुत योगदान होता है। इस बैंड की धुन सुन कर न केवल सैनिकों के ही अपितु साधारण नागरिकों के मन में भी उत्साह, निष्ठा और लगन के भाव जागृत हो जाते हैं। श्रीकृष्ण की बांसुरी की धुन से समाज के सभी वर्ग मंत्रमुग्ध होकर एक सूत्र में बंध जाने की प्रेरणा लेते थे। किसान, मजदूर, बाल, वृद्ध, महिलाएं, शहरवासी और ग्रामवासी इन सबको संगठित करने की शक्ति थी कृष्ण की बांसुरी की धुन में।

समाज और धर्म की रक्षा के लिए समय आने पर श्रीकृष्ण ने बांसुरी छोड़कर सुदर्शन चक्र भी उठा लिया था। महाभारत के युद्ध के पहले श्रीकृष्ण पांडवों के दूत बनकर दुर्योधन को धर्म शिक्षा देने के लिए सीधे उसके दरबार में जा पहुंचे, किसी प्रकार से युद्ध टल जाए, इसका प्रयास उन्होंनें किया। शांतिवार्ता से ही समस्यायें सुलझनी चाहिएं युद्ध तो अंतिम रास्ता है। योगेश्वर श्रीकृष्ण तो मातृ पांच गांव मिलने पर भी पांडवों को संतुष्ट करने की नीति पर चल रहे थे। परन्तु 'युद्ध के बिना एक इंच भूमि भी नहीं दूंगा' के उत्तर से युद्ध अनिवार्य हो गया। श्रीकृष्ण ने भीष्म पितामह और विदुर जैसे विद्वानों के माध्यमों से भी दुराचारी दुर्योधन को समझाने की कोशिश की थी। परन्तु उसके ऊपर तो युद्ध का भूत सवार था। इस भूत को उतारने का एक ही रास्ता बचा था - कुरुक्षेत्र का मैदान।

युद्ध के मैदान में कर्मयोग का उपदेश

युद्ध के मैदान में भी श्रीकृष्ण ने आदर्श राजनीतिध्कूटनीति का परिचय दिया। धर्म और अधर्म के मध्य होने जा रहे युद्ध से पहले अर्जुन को गीता के उपदेश के माध्यम से सारे संसार को कर्मयोग का उपदेश देना उनके ईश्वरी अवतार का सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। मानव के समस्त क्रियाकलापों को सुचारू दिशा देकर उसे अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचाने का रास्ता है 'गीता'। गीता का उपदेश देकर क्रांतिकारी योगेश्वर श्रीकृष्ण ने जगदगुरु की भूमिका निभाते हुए अपने पूर्णावतार को सार्थक कर दिया था। अर्जुन को घोर अवसाद और निराशावाद से निकालकर कर्मपथ पर अग्रसर कर के श्रीकृष्ण ने गीता का रहस्यध्मुख्य उपदेश समस्त विश्व के सामने रखा।

श्रीकृष्ण ने अधर्म का साथ दे रहे भीष्म पितामह जैसे दिग्गज विद्वानों तथा दुर्योधन, अश्वत्थामा और कर्ण जैसे योद्धाओं को भी समाप्त करवाने में संकोच नहीं किया। श्रीकृष्ण का अध्यात्मिक कर्मयोगी जीवन मानव की सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। अतः जन्माष्टमी के पवित्र अवसर पर उन राष्ट्रभक्त संस्थाओं को कृष्ण के जीवन एवं कार्यपद्धति से प्रेरणाध्शिक्षा लेनी चाहिए, जो समाज के संगठन और राष्ट्र के उत्थान के उद्देश्य के लिए कार्यरत हैं।

इन संगठनों पर साम्प्रदायिक, फासिस्ट, दंगे करवाने, समाज को तोड़ने जैसे आरोप लगते हैं। ध्यान दें कि श्रीकृष्ण को भी चोर, नटखट, छलिया, रसिया, रणछोड़ और झूठ बोलकर योद्धाओं को मरवाने वाला इत्यादि न जाने क्या-क्या कहा गया। परन्तु योगेश्वर कृष्ण ने इस सब आरोपों को चुपचाप बर्दाश्त किया और अपने निर्धारित उद्देश्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया। अधर्म पर धर्म की विजय हुई और असत्य सत्य के हाथों पराजित हुआ।

होने लगता है चीर हरण, तब शंख बजाया जाता है।
बांसुरी फैंक वृंदावन में, सुदर्शन चक्र उठाया जाता है।।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की पहल

लेखक- प्रमोद भार्गव

घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने के नजरिए से रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 101 रक्षा उपकरणों के आयात पर रोक लगाने की बड़ी घोषणा की है। इसी साल दिसंबर से दिसंबर 2025 तक इस घोषणा पर चरणबद्ध अमल होगा। आयात किए जाने वाले उपकरणों, हथियारों, मिसाइलों, पनडुब्बियों और हेलिकॉप्टरों का निर्माण अब भारत में होगा। इस मकसद पूर्ति के लिए आगामी 5-7 साल में घरेलू रक्षा उद्योग को करीब चार लाख करोड़ रुपए के ठेके मिलेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के श्आत्मनिर्भर भारतश् मंत्र के आह्वान के तहत रक्षा मंत्रालय अब रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में स्वदेशी निर्माताओं को बड़ा प्रोत्साहन देने की तैयारी में आ गया है। दरअसल अभीतक देश तात्कालिक रक्षा खरीद के उपायों में ही लगा रहा है लेकिन इस परिप्रेक्ष्य में दीर्घकालिक रणनीति के अंतर्गत स्वदेशी रक्षा उपाय इसलिए जरूरी हैं, क्योंकि एक समय रूस ने हमें क्रायोजनिक इंजन देने से मना कर दिया था। दूसरी तरफधनुष तोप के लिए चीन से जो कल-पुर्जे खरीदे थे, वे परीक्षण के दौरान ही नष्ट हो गए थे। पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान से युद्ध की स्थिति बनी होने के चलते ऐसा अनुमान है कि भारत 2025 तक रक्षा सामग्री के निर्माण व खरीद में 1.75 लाख करोड़ रुपए (25 अरब डॉलर) खर्च करेगा। वैसे भी भारत शीर्ष वैश्विक रक्षा सामग्री उत्पादन कंपनियों के लिए सबसे आकर्षक बाजारों में से एक है। भारत पिछले आठ वर्षों में सैन्य हार्डवेयर के आयातकों में शामिल है। इन रक्षा जरूरतों की पूर्ति के लिए अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और इजराइल इत्यादि देशों पर भारत की निर्भरता बनी हुई है, जिसमें उल्लेखनीय कमी आएगी। 2015 से 2019 के बीच सऊदी अरब के बाद भारत दूसरे नंबर पर हथियारों की खरीद करता है। बावजूद नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट से सेना के पास सभी तरह की सामग्रियों में कमी का खुलासा होता रहा है। कुछ सामानों के घटिया होने की जानकारियां भी मिलती रही हैं। चीन से खरीदी गई रक्षा सामग्रियां तो अत्यंत घटिया निकली हैं। चीन से लद्दाख सीमा पर संघर्ष के हालातों के चलते भारत ने करीब 38,900 करोड़ रुपए के 21 मिग, 29 जेट, 12 सुखोई लड़ाकू विमान और देसी मिसाइल प्रणाली व रडार खरीदने की स्वीकृतियां दी हैं। इसके पहले रक्षा क्रय परिषद् भी लड़ाकू विमान और हथियार खरीदने की मंजूरी दे चुकी है। फ्रांस से जिन 36 लड़ाकू राफेल विमानों की खरीद का बड़ा सौदा हुआ है, उसकी पांच विमानों की पहली खेप अंबाला के सैनिक अड्डे पर उतर चुकी है। भारतीय रक्षा वैज्ञानिकों को 101 उपकरणों पर लगाए गए प्रतिबंध से प्रोत्साहन मिलेगा। नतीजतन हमारे जो नवाचारी वैज्ञानिक उपग्रह प्रक्षेपण प्रणाली के लिए अत्याधुनिक रॉकेट, मिसाइलें, उपग्रहों और क्रायोजनिक इंजन तक का निर्माण करने में सफल हो चुके हैं, वे रक्षा संबंधी हथियार विकसित करने में भी सफल होंगे। बौद्धिक कल्पनाशीलता को पंख मिलते हैं, तो हम कालांतर में इन हथियारों का निर्यात भी करने लग जाएंगे।

हम जानते हैं कि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (इसरो) ने 2016 में एकसाथ 104 उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करके विश्व-इतिहास रचा था। दुनिया के किसी एक अंतरिक्ष अभियान में इससे पूर्व इतने उपग्रह एकसाथ कभी नहीं छोड़े गए थे। इस प्रक्षेपण से इसरो की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पूरी दुनिया में धाक जम गई। यह उपलब्धि इसरो ने अनेक वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए पाई थी। बावजूद चुनौतियां कम नहीं रही थीं। क्योंकि एक समय ऐसा भी था, जब अमेरिका के दबाव में रूस ने क्रायोजनिक इंजन देने से मना कर दिया था। दरअसल प्रक्षेपण यान का यही इंजन वह अश्व-शक्ति है, जो भारी वजन वाले उपग्रहों को अंतरिक्ष में पहुंचाने का काम करती है। फिर हमारे पीएसएलएसवी मसलन भू-उपग्रह प्रक्षेपण यान की सफलता की निर्भरता भी इसी इंजन से संभव थी। हमारे वैज्ञानिकों ने दृढ़इच्छा शक्ति का परिचय दिया और स्वेदेशी तकनीक के बूते क्रायोजनिक इंजन विकसित कर लिया। अब इसरो की इस स्वदेशी तकनीक का दुनिया लोहा मान रही है। अमेरिका ने हमारे रॉकेट रोहिणी-75 के प्रक्षेपण को बच्चों का खिलौना कहकर उपहास उड़ाते हुए कहा था कि 'भारत कभी भी रॉकेट नहीं बना सकता है।' यही नहीं अमेरिकी सीनेट ने दावा किया था कि 'अमेरिका भारतीय भूमि से किसी भी उपग्रह का प्रक्षेपण नहीं कराएगा।' लेकिन वैज्ञानिकों के जुनून और जिद ने अमेरिका के कथनों को झुठला दिया। आज न केवल भारत रॉकेट बनाने में सक्षम हुआ है, बल्कि इसको संचालित करने वाला क्रायोजनिक इंजन भी बना लिया है। नतीजतन अमेरिका ही नहीं तमाम विकसित देश भारत से अपने उपग्रह प्रक्षेपित कराने के लिए पंक्ति में खड़े हैं।

इसके पहले भारत स्वदेशी तकनीक से परमाणु पनडुब्बी आईएनएस श्अरिहंतश् का निर्माण 2009 में शुरू करके 2013 में इसे समुद्र में जलावतरण भी कर चुका है। इस स्वदेशी परमाणु चालित पनडुब्बी अरिहंत का परमाणु रिएक्टर चालू होना हमारी स्वदेशी तकनीकि क्षमताओं को विकसित करने की दिशा में बड़ा कदम था। यह उपलब्धि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों और इस परियोजना से जुड़े तकनीकि व रक्षा विशेषज्ञों के संयुक्त प्रयास का परिणाम थी। इससे हमारी सैन्य क्षमताओं में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई है। इस उपलब्धि के हासिल हो जाने के बाद हम समुद्र के भीतर से दुश्मन देशों पर हमला करने में सक्षम हुए हैं। यह आयुध-युक्त पनडुब्बी पांच हजार किमी तक मार करने वाली परमाणु मिसाइल को पानी के भीतर से ही निशाने पर छोड़ सकती है। गोया यह तकनीक हमारी रक्षा प्रणाली में मील का पत्थर साबित हुई है। इसी तरह स्वदेशी विमानवाहक पोत श्विक्रांतश् का भी जलावतरण हो चुका है। परमाणु पनडुब्बी निर्माण के क्षेत्र में अमेरिका, चीन, फ्रांस, रूस और ब्रिटेन के बाद भारत छठे देश की कड़ी में शामिल हो गया है। बावजूद कैग की रिपोर्टें गोला-बारूद की कमी और उनके स्तरहीन होने की जानकारियां देती रही हैं। इसलिए जरूरी है कि हम स्वदेशी स्तर पर हथियारों का निर्माण करें। भारत में ही निर्मित धनुष तोप में पांच हजार से ज्यादा कल-पुर्जे लगते हैं। बावजूद हमें कुछ पुर्जे अभी भी आयात करने पड़ते है। इनमें वायर रेस रॉलर बेयरिंग प्रमुख हैं। जर्मनी की बेयरिंग गुणवत्ता की दृष्टि से श्रेष्ठ मानी जाती है। बावजूद चीनी बेयरिंग खरीद कर धनुष तोप के बैरल में लगा दिए गए। जब इस तोप का परीक्षण किया गया तो तोप से गोला छोड़ने के बाद बैरल के बेयरिंग क्रेक हो गए। दरअसल बेयरिंग बम के गोलों को लोड करता है। यह ठीक से लोड न हो पाए और गन पाइंट ऊपर-नीचे न हो तो इसमें विस्फोट हो सकता है, इस कारण यह तोप देश के सैनिकों के लिए ही दुश्मन बन जाती है। सीबीआई ने जब इस मामले की जांच की तो पाया कि बेयरिंग खरीद में गड़बड़ी की गई है। अच्छा है कि भारत ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने का अहम फैसला लिया है। इससे भारतीय कंपनियों की हौसला-अफजाई होगी। हमारे नवोन्मेषी वैज्ञानिक व इंजीनियरों को राष्ट्र के लिए कुछ अनूठा कर डालने का गौरव हासिल होगा। अब तक देश में व्यक्तिगत उपयोग वाली पिस्तौलें और सेना के लिए राइफलें बनती हैं। हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड ने हल्के लड़ाकू विमान 'तेजस' का निर्माण भी किया है। टाटा, महिंद्रा और लार्सन एंड टुब्रो कंपनियां मध्यम मारक क्षमता वाली राइफलें बनाती हैं। यदि इन कंपनियों को सर्विलांस, राडार और साइवर संबंधी सामाग्रियों का बाजार मिलता है तो इनके निर्माण में भी ये कामयाबी हासिल कर लेंगी। साथ ही डीआरडीओ जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को भी प्रोत्साहित करने और उनकी कार्य व उत्पादन क्षमता बढ़ाने की जरूरत है। सरकार भारतीय उद्योगपतियों को भी रक्षा उद्योग में उतारने के लिए प्रेरित करे। मौजूदा दौर में अंबानी, अडानी, टाटा, बिरला, अजीम प्रेमजी जैसे कई उद्योगपति हैं, जिनके पास बड़ी मात्रा में अतिरिक्त पूंजी है। लेकिन वे इस पूंजी को केवल ऐसे आसान उद्योग-धंधों में लगाना चाहते हैं, जिनमें मुनाफा तुरंत हो। जबकि रक्षा उद्योग ऐसा क्षेत्र है, जिसमें अत्याधिक पूंजी निवेश के बावजूद देर से लाभ के रास्ते खुलते हैं। हमें रक्षा उत्पाद के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना है तो हम उन्हें आकर्षक सुविधाएं और करों में छूट देकर रक्षा उपकरणों के उत्पादन से जोड़ सकते हैं। जब टाटा उच्च गुणवत्ता के ट्रक बना सकते हैं तो टैंक क्यों नहीं बना सकते? अंबानी संचार के क्षेत्र में सेना के लिए उपयोगी उपकरण बना सकते हैं। रक्षा क्षेत्र में यह अत्यंत दयनीय स्थिति है कि ताबूत तक हमें आयात करने होते हैं, जबकि इसमें किसी प्रकार की आधुनिक व दुर्लभ तकनीक की जरूरत नहीं पड़ती है। यदि भारत रक्षा उपकरणों व हथियारों के निर्माण में आत्मनिर्भर हो जाता है तो उपग्रह प्रक्षेपण की तरह इनके निर्यात के रास्ते खुल जाएंगे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

मोदीजी के नए भारत (जो संविधान का तख्ता-पलट करके बनाया जा रहा) से 'हमें आजादी चाहिए और हम आजादी लगें'

भारत छोड़ो आंदोलन की चेतना के मायने

लेखक प्रेम सिंह

अगस्त क्रांति के नाम से मशहूर और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में मील का पत्थर माने जाने वाले भारत छोड़ो आंदोलन की 78वीं सालगिरह 9 अगस्त 2020 को है. भारतीय जनता की स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा से प्रेरित इस महत्वपूर्ण आंदोलन की 75वीं सालगिरह तीन साल पहले 9 अगस्त 2017 को मनाई गई थी. उस मौके पर प्रायरू सभी राजनीतिक पार्टियों ने अगस्त क्रांति के शहीदों की याद में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया था।

अभी तक इसकी सही जानकारी नहीं है कि अगस्त क्रांति में कितने लोग शहीद हुए थे। डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा वायसराय लिनलिथगो को लिखे पत्र के मुताबिक ब्रिटिश हुकूमत ने पचास हजार देशभक्तों को मारा था और उसके कई गुना ज्यादा लोग घायल हुए थे। 75वीं सालगिरह के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत छोड़ो आंदोलन की चेतना (स्पिरिट) को फिर से जिंदा करने का आह्वान करते हुए गांधी के नारे श्करो या मरोश् को बदल कर श्करेंगे और करके रहेंगेश् नारा दिया। यह नारा उन्होंने 2022 तक श्नया भारतश् बनाने का लक्ष्य हासिल करने के लिए दिया था। यह कहते हुए कि 2022 में भारत की आजादी के 75 साल पूरे होंगे और भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं सालगिरह की याद का उपयोग आजादी की 75वीं सालगिरह तक नया भारत बनाने के लिए किया जाना चाहिए। ऐतिहासिक तथ्यों, जिनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का विरोध भी शामिल है, के आधार पर विवेचना करें तो प्रधानमंत्री के नए भारत और उसके लिए किये गए आह्वान की भारत छोड़ो आंदोलन की चेतना के साथ संगति नहीं बैठती। क्योंकि बार-बार महिमामंडित किये जाने वाले नए भारत की सोच का भारत छोड़ो आंदोलन की मौलिक चेतना के साथ कोई रिश्ता नहीं है। प्रधानमंत्री का नया भारत एक उधार के कच्चे-पक्के डिजिटल सेटअप में एक ठहरी हुई मानसिकता को फिट करना है, जिसे अक्सर श्मनुवादश् कह दिया जाता है। यह नया भारत देश के संविधान, संप्रभुता और संसाधनों की कीमत पर बनाया जा रहा है। जबकि देश का संविधान, संप्रभुता और संसाधन औपनिवेशिक सत्ता से आजादी पाकर हासिल गए किये थे. भारत छोड़ो आंदोलन अनेक कुर्बानियों से हासिल की गई उस आजादी का प्रवेशद्वार कहा जा सकता है। प्रधानमंत्री के लिए यह सोचना स्वाभाविक है कि भारत छोड़ो आंदोलन सहित आजादी के संघर्ष की चेतना का तभी कोई अर्थ है, जब उसका इस्तेमाल नया भारत बनाने में किया जाए। ऐसा आजादी की चेतना को नव-उपनिवेश्वादी गुलामी की चेतना में घटित करके ही संभव है। उनके आह्वान में यह स्पष्ट अर्थ पढ़ा जा सकता है कि आजादी के संघर्ष की श्गलतश् चेतना को सही (करेक्ट) करने का समय आ गया हैय कि आरएसएस दूरदर्शी था, जिसने एक श्गलत चेतनाश् से प्रेरित आजादी के संघर्ष का उसी दौरान विरोध किया था! भारत के कम्युनिस्टों को इस मामले में ईमानदार कहा जाएगा कि उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया था तो उसकी चेतना और उसमें भाग लेने वाली भारत की जनता और नेताओं से भी उनका सरोकार नहीं था। हालांकि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) ने बाद में भारत छोड़ो आंदोलन में अपनी भूमिका के लिए गांधी और कांग्रेस से माफी मांग ली थी। लेकिन आज भी ज्यादातर कम्युनिस्ट नेता और बुद्धिजीवी भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अपनी विरोधी भूमिका के पक्ष में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का तर्क देते पाए जाते हैं। वे 1947 में भारत की आजादी को आजादी की इच्छा से प्रेरित भारतीय जनता के संघर्ष और कुर्बानियों का परिणाम कम, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का परिणाम अधिक मानते हैं। इस लेख में भारत छोड़ो आंदोलन में भागीदारी करने वाली भारत की जनता की आजादी की चेतना पर लोहिया के हवाले से विचार किया गया है। लोहिया ने आजादी की चेतना की जगह श्आजादी की इच्छाश् पद का प्रयोग किया है। विभिन्न स्रोतों से आजादी की जो इच्छा और उसे हासिल करने की जो ताकत भारत में बनी थी, उसका अंतिम प्रदर्शन भारत छोड़ो आंदोलन में हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन ने यह बताया कि आजादी की इच्छा में भले ही नेताओं का भी साझा रहा हो, उसे हासिल करने की ताकत निर्णायक रूप से जनता की थी। यह आंदोलन देश-व्यापी था, जिसमें बड़े पैमाने पर भारत की जनता ने हिस्सेदारी की और अभूतपूर्व साहस और सहनशीलता का परिचय दिया।

लोहिया ने रुसी क्रांतिकारी चिंतक लियों ट्राटस्की के हवाले से लिखा है कि

'रूस की क्रांति में वहां की महज एक प्रतिशत जनता ने हिस्सा लिया, जबकि भारत की (अगस्त) क्रांति में देश के 20 प्रतिशत लोगों ने हिस्सेदारी की।'

8 अगस्त 1942 को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआय अरुणा आसफअली ने गोवालिया टैंक मैदान पर तिरंगा फहरायाय और 9 अगस्त की रात को कांग्रेस के बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए। नेताओं की गिरफ्तारी के चलते आंदोलन की सुनिश्चित कार्य-योजना नहीं बन पाई थी। कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (सीएसपी) का अपेक्षाकृत युवा नेतृत्व सक्रिय था, लेकिन उसे भूमिगत रह कर काम करना पड़ रहा था। ऐसे में जेपी ने क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन और हौसला अफजायी करने तथा आंदोलन का चरित्र और तरीका स्पष्ट करने वाले दो लंबे पत्र अज्ञात स्थानों से लिखे। कहा जा सकता है कि भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जनता खुद अपनी नेता थी।

लोहिया ने भारत छोड़ो आंदोलन की पच्चीसवीं सालगिरह पर लिखा, ''नौ अगस्त का दिन जनता की महान घटना है और हमेशा बनी रहेगी। पंद्रह अगस्त राज्य की महान घटना थी। 3 नौ अगस्त जनता की इस इच्छा की अभिव्यक्ति थी - हमें आजादी चाहिए और हम आजादी लेंगे। हमारे लंबे इतिहास में पहली बार करोड़ों लोगों ने आजादी की अपनी इच्छा जाहिर की। 3 बहरहाल, यह 9 अगस्त 1942 की पच्चीसवीं वर्षगांठ है। इसे अच्छे तरीके से मनाया जाना चाहिए। इसकी पचासवीं वर्षगांठ इस प्रकार मनाई जाएगी कि 15 अगस्त भूल जाए, बल्कि 26 जनवरी भी पृष्ठभूमि में चला जाए या उसकी समानता में आए।'' अगस्त क्रांति की पचासवीं सालगिरह देखने के लिए लोहिया जिंदा नहीं थे। उनकी यह धारणा कि लोग मरने के बाद उनकी बात सुनेंगे, मुगालता साबित हो चुकी है। अगस्त क्रांति की पचासवीं वर्षगांठ 1992 में आई। उस साल तक नई आर्थिक नीतियों के तहत देश के दरवाजे देशी-विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लूट के लिए खोल दिए गए थेय और एक पांच सौ साल पुरानी मस्जिद को भगवान राम के नाम पर ध्वस्त कर दिया गया। तब से लेकर नवउदारवाद और संप्रदायवाद की गिरोहबंदी के बूते भारत का शासक-वर्ग उस जनता का जानी दुश्मन बना हुआ है, जिसने भारत छोड़ो आंदोलन में साम्राज्यवादी शासकों के दमन का सामना करते हुए आजादी का रास्ता प्रशस्त किया था और भारत को एक समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाया था। पिछले तीन दशकों के नवउदारवादी दौर में भारतीय गणराज्य की संवैधानिक नींव लगभग खोखली हो चुकी है। उसका एक नतीजा है कि अयोध्या में 5 अगस्त 2020 को उच्चतम न्यायालय की सहमती से देश के प्रधानमंत्री के हाथों धर्म-आधारित नए भारत की नींव रखी गई है। इस नए भारत का भूत इस कदर सिर चढ़ कर बोलता है कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महंत नृत्यगोपाल दास भी कहते हैं कि मंदिर का निर्माण नए भारत का निर्माण है! प्रधानमंत्री जो नया भारत बनाने का आह्वान करते हैं, उसका आगाज 1991-92 में हुआ था. पिछले करीब तीन दशकों में देश से उसकी संप्रभुता और संसाधन, तथा जनता से उसके संवैधानिक अधिकार छीन लिए गए हैं। यह काम संविधान का तख्ता-पलट करके किया गया है। भारत छोड़ो आंदोलन सहित आजादी के संघर्ष की चेतना का इस्तेमाल धड़ल्ले से नया भारत बनाने में किया जा रहा है। श्लोहिया के लोगश् भी उसमें शामिल हैं. भारत छोड़ो आंदोलन की सौवीं सालगिरह आने तक नए भारत की तस्वीर काफी-कुछ मुकम्मल हो जाएगी. ऐसा न हो, तो लोहिया के शब्द लेकर संकल्प करना होगा कि नए भारत से श्हमें आजादी चाहिए और हम आजादी लेंगेश्। लोहिया से ही सूत्र लेकर कहा जा सकता है कि भारत को फिर से प्राप्त करने की यह क्रांति 9 अगस्त 1942 की तरह भारत की जनता ही करेगी।

(लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी के शिक्षक हैं)

जश्न-ए-आजादी: सिर्फ भारतीय होने की बात करें

अधिकार ही नहीं जिम्मेदारियों का बोध भी जरूरी

लेखक मुस्ताअली बोहरा भोपाल

इस बार आजादी का जश्न कुछ अलग है, कोरोना संकट के बीच पीएम नरेन्द्र मोदी आत्म निर्भर भारत के तहत कई नए ऐलान कर सकते हैं, इनमें से एक जनसंख्या नियंत्रण कानून भी हो सकता है। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370, तीन तलाक और अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण के बाद अब केन्द्र की सत्तासीन सरकार अपने उस एजेण्डे पर आगे बढ़ रही है जिसका उसने वादा किया था। केन्द्र सरकार पूरे देश में एक संविधान लागू करना चाहती है, यानि हर शख्स के लिए एक ही कानून होगा फिर चाहे वह किसी भी मजहब का हो। तीन तलाक को खत्म कर केन्द्र सरकार ने समान नागरिक संहिता की ओर कदम पहले ही बढा दिए हैं। राष्ट्रीय नागरिक पंजी यानि एनआरसी को भी पूरे देश में लागू किया जाना है। एनआरसी के मुताबिक, जिस व्यक्ति का नाम सिटिजनशिप रजिस्टर में नहीं होता है उसे अवैध नागरिक माना जाता है। खैर, ''सबका साथ सबका विकास'' नारा देने वाली केन्द्र सरकार से कोरोना महामारी और तंगहाली से जूझ रहे लाखों लोगों को कई उम्मीदें है।

बात जश्न-ए-आजादी की हो रही है। यूं तो आजादी का मतलब ये है कि, हर नागरिक खुद को अधिकार संपन्न महसूस करे। संविधान में भी हर एक बाशिंदे को समान अधिकार दिए गए हैं, लेकिन व्यावहारिक तौर पर क्या हर किसी को बराबर अधिकार हासिल हैं, क्या सभी को समान रूप से न्याय मिल पा रहा है, क्या हर किसी को समान रूप से शिक्षा और रोजगार मिल पा रहा है? ऐसे ही कई सवाल आज भी खडे हुए हैं। ये भी सच है कि, पहले की बजाए अब लोग अपने अधिकारों को लेकर ज्यादा सजग हो गए हैं।

आगे बढ़ने की आकांक्षा बढ़ी है, जो किसी न किसी रूप में व्यक्त भी हो रही है। अभिव्यक्ति की आजादी का दायरा भी बढा है। आज सोशल वेबसाइट्स पर लोग खुलकर अभिव्यक्ति व्यक्त कर रहे हैं। लोगों की सामाजिक-राजनीतिक चेतना इनके जरिए विस्तार पा रही है। बहरहाल, दुनिया का कोई देश ऐसा नहीं जहां कोई न कोई समस्या न हो, जो अपने मुल्क में भी है। लेकिन अहम ये है कि, क्या हम समस्याओं के समाधान के लिए संकल्पित हैं ? क्या अपनी जिम्मेदारियों को हम अपनी स्वतंत्रता का अभिन्न अंग बनाने का भी संकल्प लेंगे ? या फिर हर समस्या के लिए सरकार पर ठीकरा फोडते रहेंगे। किसी भी समाज या देश की तरक्की के लिए उसके नागरिकों का अपनी जिम्मेदारियों के प्रति संकल्पित होना महत्वपूर्ण होता है। इस बार आजादी में हम यही संकल्प लें कि, अपने समाज और देश की तरक्की के लिए काम करेंगे। आजादी के बीते सालों में देश ने काफी विकास किया है। वैश्विक स्तर पर आज भारत की एक विशेष पहचान है, लेकिन सामाजिक स्तर पर अभी काफी सुधार की गुंजाइश है। लोक-कल्याण, सामाजिक समरसता, न्याय, समानता, एकता एवं अखंडता और भाईचारे को मजबूत करना होगा। जरूरी है कि हम खुद को मजहब, वर्ग, फिरकों में न बांटकर सिर्फभारतीय नागरिक होने की बात करें। जहां तक राजनीतिक दलों का सवाल है तो इनका मकसद महज सत्ता प्राप्ति तक सीमित होकर रह गया है इसलिए भारतीय लोकतंत्र और राजनीति को सही दिशा देने का काम भी हमें ही करना होगा, वह भी देशहित को सर्वोपरि रखकर।

।। जयहिंद ।।

बे रोक-टोक जारी है गुजरात आना-जाना, बस की बस में नही है कोरोना संक्रमण से बचाव की कोई व्यवस्था

माही की गूंज, बनी ऋषभ गुप्ता

जैसे की सभी को विदीत है कि, जिले में संक्रमण की बढोत्री गुजरात के दाहोद-बडोदा व अहमदाबाद में इलाज करवाने गए मरिजो के साथ हुई है। तो वही अंतर्राज्यीय बस सेवा के नाम पर कोरोना संक्रमण कितना विकराल रूप ले सकता है यह तो आप और हम भी नही बता सकते है। रायपुरिया से सूरत तक चलने वाली बसों में भारी मात्रा में सवारी बे रोक-टोक भरी जा रही है, कोरोना अब शहर से निकल कर ग्रामीण इलाको से फलियो तक पहुच गया हैं, जहा से बड़ी संख्या में ग्रामीण मजदूरी के लिए अन्य राज्यो में जाते हैं लगातार ग्रामीण इलाकों से मजदूरो का आना-जाना लगा रहता है, खासकर महाराष्ट्र और गुजरात जहां कोरोना का संक्रमण बहुत ज्यादा है। वर्तमान में संक्रमण को देखते हुए रेल सेवा को सरकार ने लगभग बन्द कर रखी है, ऐसे में बड़ी संख्या में मजदूर इन बसों के द्वारा अन्य राज्यो में जा रहे हैं और वहाँ से आ भी रहे हैं। शासन ने नियम व शर्तो के साथ इन बस संचालको को बस संचालन की अनुमति दी गई, लेकिन सभी नियमो को ताक में रखकर बस में ठूस-ठूस कर सवारियां भरी जा रही है और बस में सवारी को बिना किसी सोशल डिस्टेंसिंग और शासन के मापदंडों को धयान रखे बिना बसे संचालित की जा रही हैं। कुछ बसों का संचालन इस तरह से पुलिस प्रशासन के सामने ही किया जा रहा है, रायपुरिया थाने के पास बाईपास मार्ग पर ऐसी स्थिति रोज देखी जा सकती है, जहाँ बसों में क्षमता और नियम से अधिक सवारी लाई, ले जा रही है।

जांच की कोई व्यवस्था नही

गुजरात और महाराष्ट्र की ओर से आने-जाने वाले मजदूरों की किसी प्रकार की जांच नही हो रही है जिससे बहार से आने वाले मजदूर संक्रमण का शिकार होकर अगर आ जाते हैं तो इसकी जिम्मेदारी किसकी होगी ? क्योकि कल्याणपुरा के पास के गाँव में बहार से आए मजदूर संकृमित निकल चुके हैं और ग्रामीण इलाकों में कई ऐसे मामले आए है, जिनकी कोई कोरोना के संपर्क वाली ट्रेवल हिस्ट्री नही है फिर भी कोरोना से संकृमित पाए गए हैं।

पूरा खेल एन्ट्री का

बसों के नियमो को ताक में रखकर हो रहे संचालन के पीछे पूरा खेल चैक पोस्टो पर एन्ट्री का है, क्योंकि ये बसे हजारों किलोमीटर का सफर कई बेरियर, चेकनाके ओर पुलिस थाने आते हैं लेकिन इन बसों को कही दिक्कत नही आती न कोई रोक-टोक होती है जिसके पीछे की कहानी को आसानी से समझा जा सकता हैं जो जबाबदार केवल अपने कमीशन के चक्कर मे लापरवाही बरत कर कोरोना के संक्रमण को बढ़ाने में अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बन रहे हैं।

बेटियों को हक

लेखक-सिद्धार्थ शंकर

सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं के हक में एक बड़ा फैसला दिया है। कोर्ट ने कहा है कि पिता के पैतृक की संपत्ति में बेटी का बेटे के बराबर हक है, थोड़ा सा भी कम नहीं। उसने कहा कि बेटी जन्म के साथ ही पिता की संपत्ति में बराबर का हकददार हो जाती है। देश की सर्वोच्च अदालत की तीन जजों की पीठ ने स्पष्ट कर दिया कि भले ही पिता की मृत्यु हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) कानून, 2005 लागू होने से पहले हो गई हो, फिर भी बेटियों को माता-पिता की संपत्ति पर अधिकार होगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस बात पर जोर दिया कि पिता की पैतृक संपत्ति में बेटी को अपने भाई से थोड़ा भी कम हक नहीं है। उसने कहा कि अगर बेटी मृत्यु भी 9 सितंबर, 2005 से पहले हो जाए तो भी पिता की पैतृक संपत्ति में उसका हक बना रहता है। इसका मतलब यह है कि अगर बेटी के बच्चे चाहें कि वो अपनी मां के पिता (नाना) की पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी लें तो वो इसका दावा ठोक सकते हैं, उन्हें अपनी मां के अधिकार के तौर पर नाना की पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी मिलेगी।

देश में 9 सितंबर, 2005 से हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) कानून, 2005 लागू हुआ है। इसका मतलब है कि अगर पिता की मृत्यु 9 सितंबर, 2005 से पहले हो गई हो तो भी बेटियों को पैतृक संपत्ति पर अधिकार होगा। जस्टिस मिश्रा ने फैसला पढ़ते हुए कहा, बेटियों को बेटों के बराबर अधिकार देना हो होगा क्योंकि बेटी पूरी जिंदगी दिल के करीब रहती है। बेटी आजीवन हमवारिस ही रहेगी, भले ही पिता जिंदा हों या नहीं। अब तक हिंदू एक्ट, 1956 में साल 2005 में संशोधन कर बेटियों को पैतृक संपत्ति में समान हिस्सा पाने का कानूनी अधिकार दिया गया था। इसके तहत, बेटी तभी अपने पिता की संपत्ति में अपनी हिस्सेदारी का दावा कर सकती है जब पिता 9 सितंबर, 2005 को जिंदा रहे हों। अगर पिता की मृत्यु इस तारीख से पहले हो गई हो तो बेटी का पैतृक संपत्ति

(विचार-मंथन)

पर कोई अधिकार नहीं होगा। अब सुप्रीम कोर्ट ने इसे बदलते हुए कहा कि पिता की मृत्यु से इसका कोई लेन-देन नहीं है। अगर पिता 9 सितंबर, 2005 को जिंदा नहीं थे, तो भी बेटी को उनकी पैतृक संपत्ति में अधिकार मिलेगा। यानी, 9 सितंबर, 2005 से पहले पिता की मृत्यु के बावजूद बेटी का हमवारिस होने का अधिकार नहीं छिनेगा। सुप्रीम कोर्ट का यह क्रांतिकारी निर्णय है कि हिंदू अविभाजित परिवार में उम्र के लिहाज से सबसे बड़ी महिला सदस्य घर की कर्ता हो सकती है। हिंदू परंपरा में कर्ता का खास पारिवारिक महत्व है। लेकिन यह दर्जा पुरुष सदस्य को ही मिलता रहा है। संयुक्त परिवारों में कर्ता एक तरह से परिवार का प्रबंधक होता है। कई तरह के धार्मिक कर्मकांड करने का अधिकार सिर्फउसको होता है। हिंदू परंपरा धर्मशास्त्र और मिताक्षर जैसी स्मृतियों से निर्धारित हुई। उनके मुताबिक पैतृक संपत्ति के उत्तराधिकारी केवल पुरुष सदस्य होते रहे। 2005 के कानून से यह विसंगति पैदा हो गई कि महिला पैतृक संपत्ति की उत्तराधिकारी तो हो सकती है, लेकिन उसके प्रबंधन में उसके अधिकार सीमित हो जाते है। तो अब कोर्ट ने इस विसंगति को दूर कर दिया। कहा कि अब ऐसा कोई कानून नहीं है, जो परिवार की सबसे बड़ी महिला सदस्य के कर्ता बनने में बाधक हो। गौरतलब है कि परिवारों में संपत्ति की खरीद-बिक्री या स्वामित्व परिवर्तन के समय कर्ता की विशेष भूमिका होती है। कोर्ट के ताजा फैसले के बाद अब बेटी न सिर्फपिता की संपत्ति में बराबर का हिस्सा पाने की हकदार है, बल्कि सबसे बड़ी संतान होने की स्थिति में उसके प्रबंधन का अधिकार भी पा सकेगी। इस तरह साफहै कि 2005 के कानून ने जो आधार बनाया, वह अपने तार्किक मुकाम पर पहुंचा है। इससे हिंदू परिवारों की बनावट एवं अंदरूनी समीकरणों में गुणात्मक बदलाव का मार्ग प्रशस्त हुआ है। इसके परिणामस्वरूप हिंदू महिलाओं का वास्तविक सशक्तीकरण होगा। वैसे ध्यानार्थ यह है कि कोई कानून या न्यायिक फैसला अपने समय की अभिव्यक्ति होता है। इनमें समाज में जारी प्रवृत्तियां ही प्रतिबिंबित होती हैं। कोर्ट का निर्णय इसलिए प्रासंगिक है, क्योंकि भारतीय परिवारों में महिलाओं का आर्थिक रूप से सशक्त होना एक सामाजिक परिघटना बन चुका है। हाल ही में जारी हुए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों से सामने आया कि देश के 15 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 40 फीसदी से अधिक महिलाओं के पास संपत्ति है या संपत्ति में उनका हिस्सा है। यह आंकड़ा दस साल पहले हुए इसी तरह के सर्वे की तुलना में काफी बढ़ा है। ताजा सर्वे से सामने आया कि तकरीबन आधे परिवारों में संपत्ति की मालकिन होने के साथ ही महिलाएं पति की संपत्ति में भी हिस्सेदार हैं। आशा की जानी चाहिए कि यह समता और लैंगिक न्याय की दिशा में अपने समाज का युगांतकारी कदम होगा।

सेंध लगाकर चोरों ने की मवेशी की चोरी

माही की गूंज, पेटलावद

करवड़ चौकी के अंतर्गत अज्ञात चोरों ने थावरचंद गामड़ निवासी करवड़ के घर में सेंध लगाकर अंदर घुसे ओर थावरचंद गामड़ की तीन बड़ी बकरी, एक बकरी का बच्चा, एक भैंस और एक पाड़ा कुल 6 मवेशी चोरी कर ले गए। घर के पिछ्ले हिस्से में भी चोरों ने दीवार में सेंधमारी करने की कोशिश की। उक्त चोरी की जानकारी घर वालो को सुबह लगी, पूरा परिवार घर मे ही मौजूद था लेकिन किसी को चोरों की आहट तक पता नही चली, मामले की जानकारी पुलिस चौकी करवड़ को दी गई, मौके पर चौकी प्रभारी डामोर मौका मुआयना कर जाँच कर रहे है। लेकिन चोरी की घटना के चार दिन बित जाने के बाद भी अभी तक चोरी का खुलासा नही हुआ है, वही ग्रामवासियो की माने तो कह रहे है आज क्या आगे भी ऐसी चोरीयो का खुलासा पुलिस कभी नही कर पाएगी।

नाबालिक के साथ छेड़छाड़ करने वाले दो आरोपियों को न्यायालय ने भेजा जेल

माही की गूंज, थांदला। 2 अगस्त की शाम के 8 बजे फरियादी पीड़िता अपने जेठ की लड़की के साथ पैदल-पैदल अपने बुआ के घर जा रही थी, जैसे ही वह दोनों भीमकुंड आंगनबाड़ी के आगे पहुंची तभी उनके पीछे-पीछे पैदल-पैदल ग्राम भीमकुंड के ही दोनो आरोपी नगीन पिता दूल्हा कटारा एवं नरू पिता हरचंद सिंगाड़ आए एवं दोनों का रास्ता रोककर बुरी नियत से उन दोनों को पकड़ लिया एवं उनके चिल्लाने पर जान से मारने की धमकी भी दी थी।

फरियादी की रिपोर्ट पर थाना थांदला की पुलिस द्वारा आरोपीगण के विरुद्ध अपराध क्रमांक 322/2020 धारा 341, 354, 506, 34 भादवि एवं 7/8 पाक्सो एक्ट के अंतर्गत अपराध पंजीबद्ध किया गया था। थाना थांदला की पुलिस द्वारा दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। न्यायालय ने मंगलवार को आरोपीयों को जेल भेज दिया।

ग्रामीण क्षेत्र के सच्चे कार सेवकों को भूले सांसद और जिलाध्यक्ष

माही की गूंज, पेटलावद

05 अगस्त को अयोध्या में राम मंदिर के शिलान्यास को यादगार बनाने के लिए कार सेवको के सम्मान की बेला का भी आयोजन किया, रतलाम-झाबुआ के सांसद गुमानसिंह और जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक ने जिले के कार सेवको का शाल-श्रीफल से घर-घर जाकर सम्मान किया, लेकिन अपनी सीमित कार्यकर्ताओ की फौज से जुटाई जानकारी और पार्टी के जगह-जगह के स्थानीय कार्यकर्ताओ की उपेक्षा के कारण कार सेवको की सम्मान की बेला में कई कार सेवक ग्रामीण इलाकों के छूट गए। यू तो जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक पूरे आयोजन में साथ थे पर उन्होंने भी अपने संगठन के स्थानीय कार्यकर्ताओ की पूछ परख नही की न ही अपने स्तर से कोई जानकारी जुटाई जिस कारण ग्रामीण क्षेत्र के कई कार सेवको का सम्मान नही हुआ।

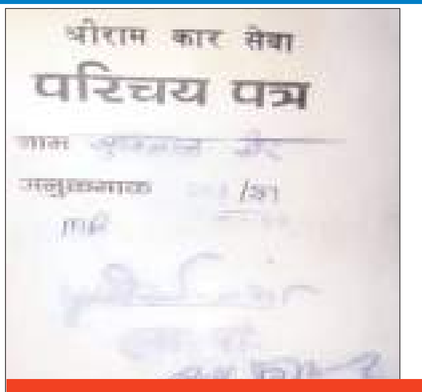

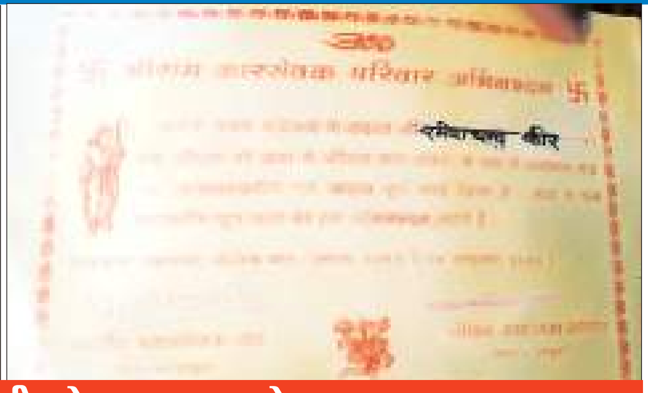

स्थानीय कार्यकर्ताओं को तव्वजों नही देना भारी पड़ेगा भाजपा को

बामनिया तक आए लेकिन नही पता कौन-कौन रहे कार सेवक

कार सेवको के सम्मान के लिए निकले सांसद गुमान ओर जिलाध्यक्ष बामनिया तक आए लेकिन बामनिया आगमन की जानकारी किसी भी स्थानीय नेता को नही मिली, जिलाध्यक्ष साथ तो थे लेकिन संगठात्मक स्तर पर न तो जिलाध्यक्ष न ही ग्रामीण मंडल अध्यक्ष ने स्थानीय कार सेवको की कोई जानकारी ली और एक मात्र घर पर जाकर इतिश्री कर ली, जबकी बामनिया के पास ही गाँव सातेर ओर मुल्थनिया के कार सेवक सुखलाल कीर, कालूसिंह आर्य और रमेशचंद्र कीर इंतजार ही करते रह गए पर सांसद गुमान ओर जिलाध्यक्ष का काफिला इन ग्रामीण गाँव तक नही पहुँच पाए जिससे अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए दिए अपने समर्पण और त्याग के लिए मिलने वाले सम्मान से अछूते रह गए।

स्थानीय कार्यकर्ता की उपेक्षा से भाजपा को भुगतना पड़ सकता हैं गम्भीर परिणाम

भाजपा में मची भारी गुटबाजी से पार पाने के लिए बिना किसी गुट के संघ पृष्ठ भूमि के लक्ष्मणसिंह नायक को जिलाध्यक्ष बनाया गया लेकिन वर्तमान की परिस्थितियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि, पार्टी की सोच पर नए जिलाध्यक्ष भी खरे नही उतरे और अब तक पुराने ढचरे के साथ ही काम चल रहा है, जो पहले से गुटबाजीय संचालित कर रहे और इसी के परिणाम स्वरूप पूरे जिले में स्थानीय स्तर पर एक्का-दुक्का कार्यकर्ताओ को छोड़कर बाकी सब नए जिलाध्यक्ष के आने के बाद भी उपेक्षित है। संगठन स्तर पर कमजोर तैयारी के कारण केवल बड़े गाँवो के प्रतिष्ठित कार सेवको को सम्मानित किया गया और ग्रामीण स्तर पर कई पुराने कार्यकर्ता और कारसेवक सम्मान की बेला से बाहर हो गए। सांसद गुमान के राजनीति में आने के बाद से भाजपा की राजनीति आभामंडल वालो के आसपास सिमट कर रह गई है और जमीनी भाजपाई अब उपेक्षित हो रहे हैं, जिसके दूरगामी परिणाम भाजपा के लिए परेशानी का सबब बन कर उभरना भी तय माना जा रहा है।

जमींदार हो गए राहत इंदौरी

माही की गूंज इन्दौर, निशिकांत मंडलोई

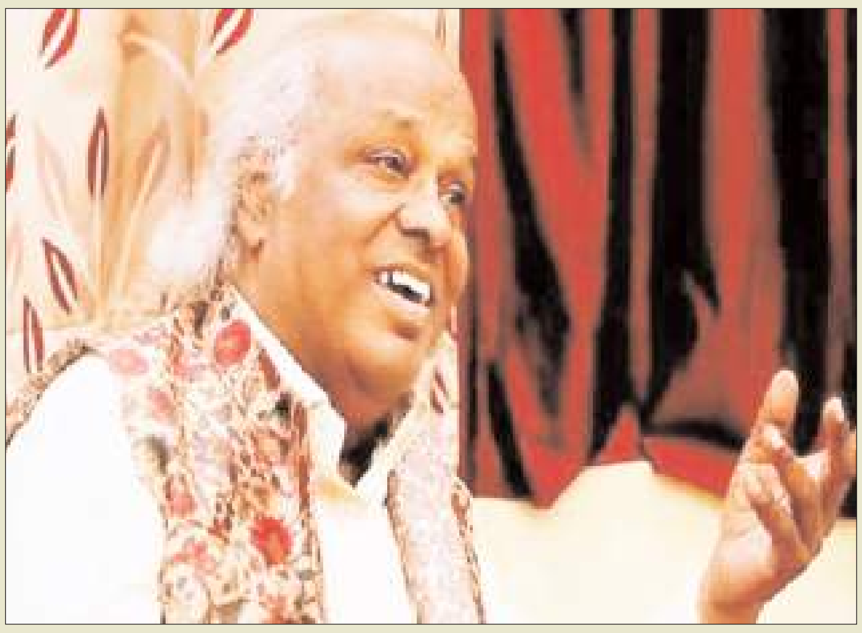

राहत साहब की शायरी ने हमेशा ही सबको राहत प्रदान की लेकिन उनकी एक खबर ने सभी को आहत भी कर दिया। जिंदगी को जिंदादिली से जीने वाले राहत ने जिंदगी से मंगलवार को राहत पा ली। अपने शायरी का बेताज बादशाह हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी शायरी हमें उनके बाद हमेशा सभी को राहत देती रहेगी। बेशक उनका हमारे बीच से चले जाना एक अच्छे नेकदिल शायर का जाना माना जाएगा। शायरी की दुनिया में उन्होंने जो मुकाम बनाया वह अब शायद ही कोई बना पाएगा।

जिंदगी से ज्यादा मौत को बेहतर जानने वाले राहत साहब अपनी शायरी में अक्सर कहा करते थे ''दो गज सही मगर ये मेरी मिल्कियत तो है, ऐ मौत तूने मुझे जमींदार कर दिया''। यह उनकी हमेशा से ख्वाहिश रहा करती थी तभी तो अपने अनोखे शायराना अंदाज में वो बहुत गहरी बात कह जाते थे। हालातों के मद्देनजर ही उनकी वह पंक्तियां याद आती हैं

''सभी का खून शामिल है यहां की मिट्टी में, किसी के बाप का हिंदुस्तान थोड़ी है'' कहकर अपनी वतन परस्ती की मिसाल भी पेश करते थे।

वे कोई नेता, धर्म गुरु, जाति प्रमुख नहीं थे इन सभी से परे उनके ख्यालात होते थे। तभी तो उन्होंने अपनी शायरी के माध्यम से यह तक कह दिया कि, ''जब मेरी मौत हो तो मेरी पेशानी पर हिंदुस्तान लिख देना''।

एक उम्दा गीतकार भी थे राहत...

राहत साहब शायर के साथ ही एक बेहतरीन सफल गीतकार भी थे। हिंदी सिनेमा के लिए उन्होंने कई गीत भी लिखे। उनके लिखे गीतों में, दीवाना दीवाना(दर्द,, 1996), नींद चुराई मेरी किसने ओ सनम (इश्क, 1979), चोरी चोरी जब नजरें मिली(करीब, 1998), बुम्बरो बुम्बरो (मिशन कश्मीर2000), देख ले, और छन छन (मुन्ना भाई एमबीबीएस 2003), दिल को हजार बार रोका (मर्डर 2004) तथा दो कदम और सही तथा ये रिश्ता (मीनाक्षी ए ऐ टेल ऑफथ्री सिटीज, 2004) के अलावा 2017 में फिल्म बेगम जान, के लिए, मुर्शिद, जैसे शानदार गीत लिखकर एक गीतकार के रूप में भी स्थापित हुए।

जमींदार बनने में लगे 12 वर्ष

राहत साहब अपनी शायरी के माध्यम से जमींदार बनने की अपनी ख्वाहिश जाहिर करते थे। 2008 का एक वाकया है उत्तरप्रदेश के ललितपुर में बाबा सदन शाह के उर्स के अवसर पर, एक शाम राहत इंदौरी के नाम, मुशायरे में शेर पेश करते समय वे सीने में तकलीफकी वजह से गिर गए थे लेकिन तुरन्त चिकित्सा व उनके करोड़ो प्रशंसकों की दुआओं ने उन्हें हमारे बीच सलामत रहे लेकिन 12 साल बाद आज फिर उनकी तबियत नासाज होने पर उनके प्रशंसकों ने उनके स्वस्थ होने की दुआ की लेकिन उन्हें तो जमींदार बनना था सो कैसे नहीं बनते।

तुलावटियों ने तहसीलदार व नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंप कर किया धरना खत्म

माही की गूंज, सनावद

कृषि उपज मंडी में अपनी 4 सूत्री मांगों को लेकर धरने पर बैठे तुलावटियों का धरना मंगलवार को समाप्त हुआ। धरना स्थल पर प्रभारी तहसीलदार राहुल डावर व नायब तहसीलदार कृष्णा पटेल ने पहुंचकर तुलावटियों से इस संबंध में चर्चा की। अध्यक्ष हरनाम सिंह सोलंकी ने बताया कि संघ द्वारा अपनी 4 सूत्री मांगों के लिए यहां पर धरना दिया जा रहा था। जिसमें अधिकारियों को ज्ञापन देकर अपनी बात खरगोन भोपाल तक भिजवा चुके हैं। लेकिन इस संबंध में अभी तक कोई निराकरण नहीं हुआ। मंगलवार को प्रभारी तहसीलदार डाबर एवं नायब तहसीलदार पटेल नायब ने वहां पहुंचकर चर्चा की। जिसके बाद उन्होंने ज्ञापन देकर अपना धरना समाप्त किया। तहसीलदार डाबर ने बताया कि तुलावटियों की समस्या स्थानीय स्तर पर होने के साथ-साथ प्रदेश स्तर पर भी होने से इसका समाधान राज्य शासन से मिले निर्देशों के बाद ही हो सकेगा। साथ ही इनकी बात को वरिष्ठ अधिकारियों तक भिजवाने का कार्य किया जाएगा। इस दौरान मंडी सचिव बीएस परिहात पटवारी नारायण दस्साने सहित कृषि उपज मंडी मजदूर महासंघ के मोहन प्रजापति, मुकेश पाटके, सेवकराम वर्मा, राधेश्याम योगी, बलिराम वर्मा, देवेंद्र सोलंकी, हरकचंद वर्मा सहित तुलावटी मौजूद थे।

कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए त्यौहारों के लिए पुलिस ने नगरवासियों को दिए निर्देश

माही की गूंज, सनावद

आगामी दिनों में स्वतंत्रता दिवस, गणेश उत्सव, मोहर्रम जैसे त्यौहार आने वाले है। लेकिन देश एवं प्रदेश में कोरोना संक्रमण के कारण स्थिति नाजुक बनी हुई है। साथ ही सभी धर्मों के धार्मिक पर्व एवं त्यौहार के लिए गृह मंत्रालय द्वारा विशेष गाइडलाईन जारी की गई है। जिसका पालन सभी आयोजन समितियों को करना होगा। यह बात टीआई ललितसिंह डांगुर ने नगर के मुस्लिम समाज की अलग-अलग पंचायतों की बैठक के दौरान व्यक्त कि। टीआई डांगुर ने बताया कि, कोई भी धार्मिक कार्य एवं त्यौहार का आयोजन सार्वजनिक स्थलों पर नहीं किए जाएंगे, धार्मिक जुलूस या रैली नही निकली जा सकेगी, साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर किसी प्रकार की मूर्ति, झांकी, ताजिया की स्थापना नहीं करे। सर्व संबंधित से अपेक्षा है की अपने अपने घरों में ही पूजा उपासना करेंगे।

धार्मिक स्थलों पर जमा नही हो 5 से अधिक लोग-

इस दौरान अनु आयोजनों के सबंध में जानकारी देते हुए टीआई डांगुर ने बताया कि 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर राज्य शासन द्वारा प्रसारित निर्देशों के अनुरूप आयोजित किया जाए। निजी तौर पर आयोजित किए जाने वाले समारोह में 5 से अधिक लोगो से अधिक ना सम्मिलित हो। साथ ही फेस कवर एवं सोशल डिस्टेंस का कड़ाई से पालन किया जावेगा। इस दौरान अंजुमन सदर मिर्जा खालिद बेग हाजी शिराज गुड्डू सेकेट्री शोएब बबलू शकूर सेठ दिलावर बेग शेख मुजफ्फर सहित अन्य पंचायतों के मेंबर मौजूद थे।

जेल प्रहरी पद के लिए आवेदन की तारीख बढ़ी

अब 24 अगस्त तक कर सकेंगे आवेदन

माही की गूंज, बड़वानी

प्राचार्य डॉ. आरएन शुक्ल के मार्गदर्शन में कार्यरत शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के कार्यकर्ताओं, प्रीति गुलवानिया और राहुल मालवीया ने बताया कि, जेल प्रहरी परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की तारीख बढ़ गई है। अब 24 अगस्त तक आवेदन किए जा सकते हैं। पहले यह तारीख 10 अगस्त थी। कॅरियर काउंसलर डॉ. मधुसूदन चौबे ने बताया कि, प्रोफेशनल एग्जामिनेशन बोर्ड, भोपाल के द्वारा जेल प्रहरी के 282 पदों पर भर्ती हेतु विज्ञापन जारी किया गया है। आवेदन करने के लिए न्यूनतम आयु 18 वर्ष है। जहां तक अधिकतम आयु का सवाल है मध्यप्रदेश के मूल निवासी अनारक्षित वर्ग के पुरुष आवेदक 33 वर्ष एवं आरक्षित वर्ग के पुरुष आवेदक तथा सभी महिला आवेदक अधिकतम 38 वर्ष की आयु तक आवेदन कर सकते हैं।

पेड़ जीवनदायिनी ऑक्सीजन देते हैं इसलिये इन्हें बचाना हम सबका दायित्व है - जिला सत्र न्यायाधीश श्री कोठे

माही की गूंज, बड़वानी

पेड़ हमें जीवनदायिनी आक्सीजन देते है। पेड़ो के बिना, प्राणियों के अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती। इसलिये पर्यावरण सहजने में हम सबको सहयोग देना होगा, अन्यथा प्राणी मात्र का अस्तित्व बचाना संभव नही होगा ।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश रामेश्वर कोठे ने उक्त विचार रेवाकुंज पहाड़ी पर साथी न्यायाधीशों एवं उनके परिवार के सदस्यों तथा रेवाकुंज हेप्पीनेस क्लब के सदस्यों के साथ मिलकर पौधारोपण करने के दौरान कही । इस अवसर पर आयोजित विधिक साक्षरता शिविर में उपस्थित पर्यावरण प्रेमी युवाओ को सम्बोधित करते हुये श्री कोठे ने बताया कि धरती की हरियाली बढ़ाने व पर्यावरण संरक्षण में प्रत्येक मनुष्य की सहभागिता अनिवार्य है। रेवाकुंज पहाड़ी पर पौधारोपण कर उसे रमणीय बनाने में जो युवा पिछले कई दिनों से श्रमदान कर रहे है, वे सभी के लिये प्रेरणादायी है। इस अवसर पर श्री कोठे ने पहाड़ो पर लगाई जा रही त्रिवेणी की भी प्रशंसा करते हुये नीम, पिपल एवं बड़ पेड़ की महत्ता से भी उपस्थितों को अवगत कराया । इसके पूर्व शिविर एवं पौधारोपण हेतु स्थल पर न्यायाधिशों एवं उनके परिवार के सदस्यों के पहुंचने पर उनका स्वागत तहसीलदार राजेश पाटीदार द्वारा गुलदस्ता देकर किया गया ।

शिविर के दौरान जिला सत्र न्यायाधीश रामेश्वर कोठे एवं उनकी पत्नि श्रीमती राधा कोठे, विशेष न्यायाधीश दिनेशचंद्र थपलियाल एवं उनकी पत्नि श्रीमती कुमुद थपलियाल, प्रधान न्यायाधीश श्रीमती सुशीला वर्मा, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश हेमंत जोशी एवं उनकी पत्नी श्रीमती संगीता जोशी, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश आशुतोष अग्रवाल, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश राकेश सोनी, प्रधान न्यायाधीश किशोर न्याय बोर्ड श्रीमती रश्मि मंडलोई, व्यवहार न्यायाधीश सुमित्रा ताहेड, प्रशिक्षु न्यायाधीश राहुल सोनी, श्रीमती जयश्री आर्यन, तहसीलदार श्री पाटीदार, सामाजिक कार्यकर्ता जितेंद्र निकुम, पर्यावरण ग्रुप के नोडल अधिकारी अर्जुन परमार, पेरालीगल वालेंटियर विनय जोशी, देवेन्द्र चौहान, शिवानी चोयल, सुनीता चौहान, श्रीमती अनीता चोयल एवं रेवाकुंज हैप्पीनेस क्लब के आनंदको ने पौधारोपण किया।

शिवसेना ने [रिंटाइन के नाम पर हो रही अनियमित्ता के लिए राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

स्वस्थ लोगों को अस्पताल में अनावश्यक भर्ती करने पर जताई नाराजगी

माही की गूंज खंडवा।

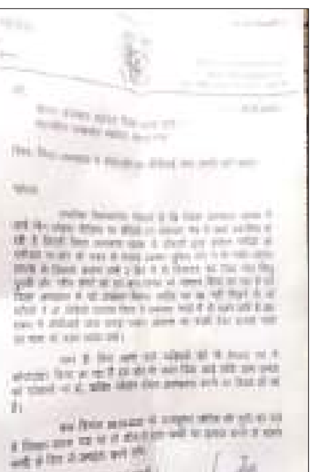

खंडवा जिला अस्पताल में लगातार स्वस्थ लोगों को भर्ती करने और उनको 10-15 दिनो तक अनावश्यक क्वॉरेंटाइन कर परेशान करने और मामूली सर्दी,जुकाम, बुखार में भी कोविड वार्ड में भर्ती किए जाने की जांच कराने की शिकायत शिवसेना जिला प्रमुख गणेश भावसार ने म.प्र के महामहिम राज्यपाल के नाम खंडवा कलेक्टर के माध्यम से सीबीआई जांच कराने की मांग के लिए ज्ञापन दिया। श्री भावसार का कहना है, खंडवा जिले के अस्पताल में कोरोना पॉजिटिव की भर्ती दिखाकर स्वस्थ लोगों को भी 10 से 15 दिन तक अनावश्यक रूप से रखा जा रहा है इस तरह के लगातार सोशल मीडिया पर भर्ती मरीजों के वीडियो के माध्यम से स्पष्ट हो रहा है कि, स्वस्थ लोगों को भी भर्ती किया जा रहा है। वही भर्ती होने के बाद डॉक्टर मरीजों को कई दिनों तक देखने तक नहीं जाते, भर्ती मरीजों की शिकायत है कि उन्हें डॉक्टर देखने तक नहीं आते तथा स्वास्थ्य व सफाई कर्मी ही उन्हें दवाईयां और खाना पहुंचा देते हैं। भर्ती व्यक्तियों का वायरल वीडियो में स्पष्ट कहना है कि, उन्हें किसी भी तरह की बीमारी के संकेत नहीं है उसके बावजूद भी उन्हें अनावश्यक लंबे समय तक अस्पताल में रखा जा रहा है, या घरों में क्वॉरेंटाइन किया जा रहा है। जिससे उनके परिवार में भय का वातावरण बना रहता है तथा रोजी-रोटी से भी उन्हें हाथ धोना पड़ रहा है, उनको अनावश्यक भर्ती रखने से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ रही है, राज्यपाल से वास्तविकता की जांचने के लिए जिला अस्पताल खंडवा में सीबीआई के माध्यम से जांच कराने का अनुरोध किया गया है। वही भर्ती मरीजों को अस्पताल प्रशासन द्वारा धमकाने डराने की बातें भी लगातार सोशल मीडिया और शहर में चल रही है। उपरोक्त मुद्दे को ध्यान रखते हुए जिला अस्पताल में वास्तविकता की जांच अतिशीघ्र करने की मांग शिवसेनिको ने प्रमुखत्ता से की है।

चाबी बनाने गए सिकलीगरों ने की चोरी का पुलिस ने किया खुलासा

माही की गूंज बड़वानी

पुलिस ने छोटी कसरावद के पास कुक्षी की तरफसे चोरी कर बिना नम्बर की मोटर सायकल पर आ रहे तीन सिकलीगरों को गिरफ्तार कर उनके पास से 2 लाख 4 हजार 900 रूपये की राशि जप्त की। पुलिस अधीक्षक ने इस कार्यवाही को अंजाम देने वाले पुलिसकर्मियों को पुरस्कृत करने की घोषणा की है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती सुनीता रावत एवं थाना प्रभारी बड़वानी राजेश यादव ने बुधवार को पुलिस कन्ट्रोल रूम में आयोजित प्रेस कान्फ्रेस के दौरान बताया कि, छोटी कसरावद पुल पर 11 अगस्त को जाच के दौरान बिना नम्बर की पल्सर मोटर सायकल पर तीन सिकलीगरों को कुक्षी की तरफसे आते हुए रोककर जब उनसे पूछताछ की गई तो वे संतोषजनक जवाब नही दे पाये। जांच के दौरान मोटरसायकल की डिक्की एवं झोले में 2 लाख 4 हजार 900 रूपये पाये गये। अंजड़ के रहवासी इन सिकलीगर से जब कढ़ाई से पूछताछ की गई तो उन्होने बताया कि, कुक्षी में गोदरेज की चाबी बनाने के लिये जिस परिवार ने उन्हें बुलाया था, उसकी गोदरेज की चाबी बनाते हुए उन लोगो ने चालाकी से अलमारी में रखी हुई उक्त रकम चुराई है। इस पर पुलिस ने अंजड़ निवासी 24 वर्षीय सिकलीगर रामदास पिता दिलावर, 25 वर्षीय धरमसिंह पिता दर्शनसिंह, 21 वर्षीय सुनिल उर्फ गुल्ला उर्फगुलशन पिता चिराग को गिरफ्तार कर अपराध पंजीबद्ध किया है। जांच के दौरान इनके विरूद्ध धार में धारा 454, 380 का पंजीबद्ध पाया गया है। वहीं सुनिल के विरूद्ध इन्दौर में नकबजनी, जबरन वसूली एवं मारपीट के तीन प्रकरण पंजीबद्ध पाये गये है।

दुर्गावाहिनी की बहनों द्वारा पुलिसकर्मियों को रक्षासुत्र बांध मनाया रक्षाबंधन

माही की गूंज, सनावद

रक्षाबंधन के पर्व पर भाई-बहन का अनुपम स्नेह होता है। और पुलिसकर्मी हमारे भाई ना होकर भी यह दायित्व हर बहन बेटी के लिए निभाते हैं। जिसके बाद इन्हें राखी बांधकर हम एक सुखद अनुभूति कर रहे हैं। यह बात नगर की विहीप मातृशक्ति दुर्गावाहिनी की बहनों द्वारा रक्षाबंधन का कार्यक्रम के दौरान थाने में पुलिसकर्मियों के लिए व्यक्त किये। थाना प्रभारी ललितसिंह डांगुर ने भी दुर्गावाहिनी के कार्य की प्रशंसा कर रक्षा सूत्र बंधवाया। इस दौरान जिला संयोजक उमा बैसवार उषा पारीक नेहा माने भावना केवट लक्ष्मी कदम एकता बैसवार सहित पुलिसकर्मी मौजूद थे।

दुर्घटना में जीप हुई चकनाचूर लेकिन बच गई सवारी की जान

माही की गूंज, पेटलावद (झाबुआ)

शाम लगभग 5 बजे के करीब पेटलावद बामनिया मार्ग पर दुलाखेड़ी में हनुमान घाटी के नीचे बामनिया से पेटलावद आ रही बोलेरो जीप अनियंत्रित होकर पुल से नीचे उतर कर पलटी खा गई। दुर्घटना इतनी भयंकर थी कि, जीप को क्रेन से बाहर निकलना पड़ा और जीप पूरी तरह से चकनाचूर हो गई। जीप की हालत देख कर जीप में बैठी सवारी के बचने की उम्मीद भी नही थी लेकिन कहते हैं मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है, इतनी भयंकर दुर्घटना के बाद भी बैठे दो लोगो को मामूली चोटें आई, जीप और उसमें बैठी सवारी को मामूली चोट आई, जीप और उसमें बैठे लोग बामनिया के बताए जा रहे हैं। मोके पर डायल 100 पहुँच कर जीप को बाहर निकलवाया।

कुएं में गिरने से एक युवक की मौत

माही की गूंज, सनावद

गांव के एकं युवक कि बिना मुंडेर के कुए में गिरने के बाद डूबने से मौत हो गई। जिसके बाद पुलिस ने शव का पीएम करवाकर परिवार वालो को सौपा। ग्राम छोटी आली खुर्द में सोमवार को रात 9 बजे रविंद्र पिता शिवाजी (22) अपने घर से बाहर जाने का बोलकर निकला था। रात को ही घर के पास बने सार्वजनिक कुएं में गिर गया। जिससे डूबने से उसकी मौत हो गई। रविंद्र अपने परिवार का इकलौता लड़का था। ग्रामीणो ने आरोप लगाया कि कुएं में जाली नहीं लगी हुई है। जिसके बाद अनेक बार छोटी मोटी घटनाएं होती रहती है। आसपास की दीवारें टूटी हुई है। जिसके कारण वह कुएं में गिर गया। कुआं करीब 50 फीट गहरा था। जिसके कारण रात में गोताखोरों ने शव को बाहर निकालने से मना कर दिया था। मंगलवार सुबह पुलिस ने गोताखोरों की मदद से रविंद्र को बाहर निकाला। एसआई शरद पाटिल ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों के सुपुर्द किया गया।

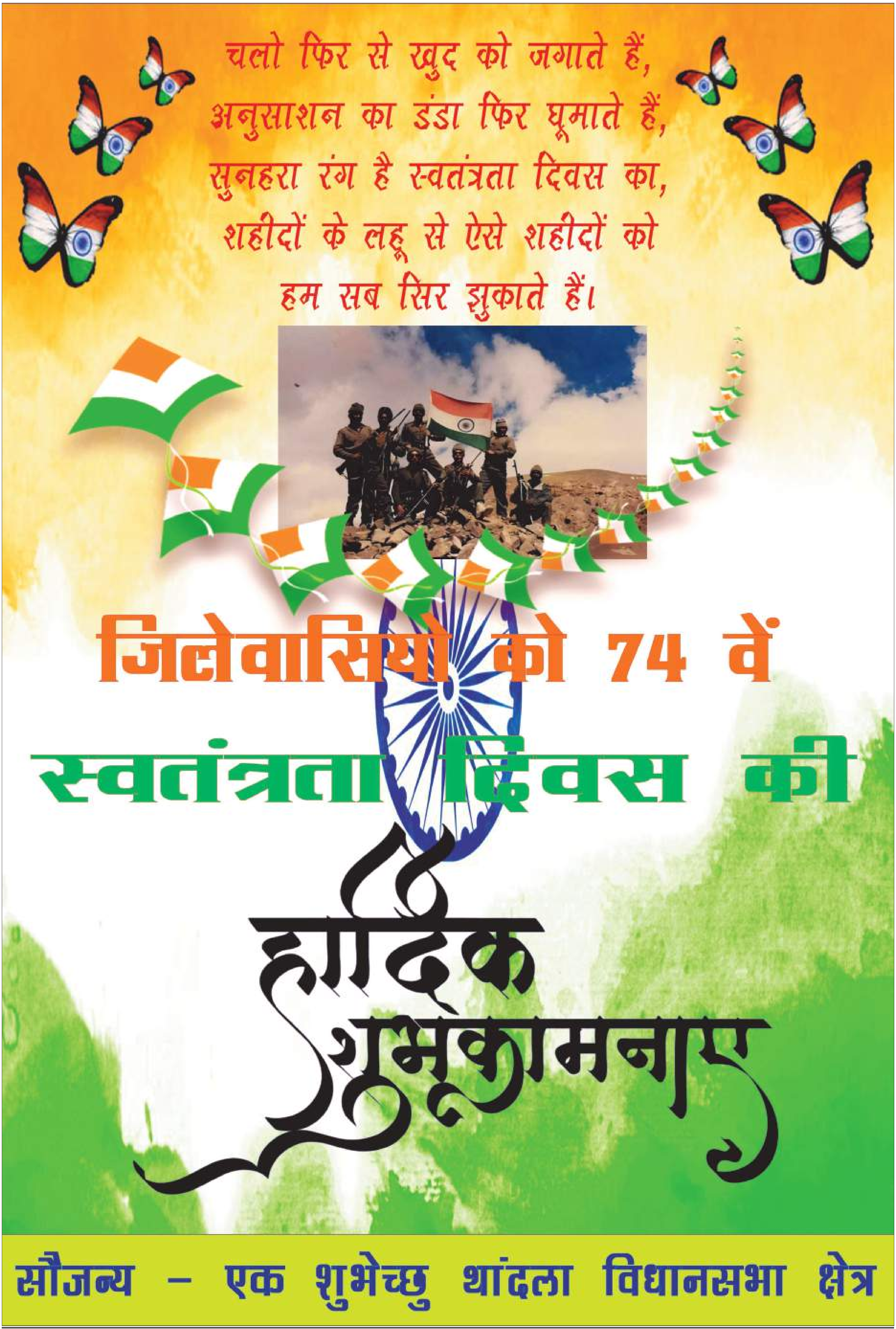
चलो फिर से खुद को जगाते हैं,
अनुसाशन का डंडा फिर घूमाते हैं,
सुनहरा रंग है स्वतंत्रता दिवस का,
शहीदों के लहू से ऐसे शहीदों को
हम सब सिर झुकाते हैं।
जिलेवासियों को 74 वें
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाए
सौजन्य - एक शुभेच्छु थांदला विधानसभा क्षेत्र

बाबू ने भाई, पत्नी, बहन सहित कई परिवार के सदस्यों की नौकरी लगवाकर किया फिट

अटकान की सांठ-गांठ व प्रभाव से अंशकालीन से स्थाईकर्मी तक का सफर परिवार के सदस्यों ने कर लिया पार

माही की गूंज, संजय भटेवरा

80 के दशक में बा.उ.मा.वि.पेटलावद में नियमित स्वीपर के पद पर कलेक्टर दर से लगे बाबू अटकान ने साठ-गाठ व अपने प्रभाव के साथ धीरे-धीरे अपने पूरे परिवार को विभाग में नोकरी लगवाकर सेट कर दिया। बाबू की पत्नी से लेकर भाई, बहन, बच्चे और बहन के बच्चों तक को एक-एक कर नोकरी में सेट कर दिया। बाबू ने अपने पैर जमते ही सबसे पहले अपने भाई को सेट किया, बाबू का ट्रासंफर जैसे ही संदला हुआ, बाबू के परिवार के लोगो का नोकरी में आने का सिलसिला शुरू हुआ, पेटलावद से संदला जाते ही अपने स्थान पर अपने भाई को अंशकालिन स्वीपर के पद पर लगा दिया, जो आज अंशकालिन से पूर्णकालिक ओर फिर स्थाई स्वीपर पद पर पहुँच कर वर्तमान में बा.उमावि. पेटलावद में पदस्थ हैं।

बाबू ने स्वयं की पत्नी को वर्ष 1991 में प्रथम नियुक्ति अंशकालीन स्वीपर पद पर कन्या छात्रावास पेटलावद में पदस्थ करवाया गया, फिर बाबू की सेटिंग से प्राचार्य से मिलीभगत कर पत्नी को वर्ष 2010 में रसोयन के पद पर अंशकालिक से कलेक्टर दर पर करवा दिया, इसके बाद सारे नियमो को ताक में रख बाबू ने पत्नी को स्थाईकर्मी तक पहुँचा दिया। इसी प्रकार वर्ष 1991 में ही बाबू ने बहन को कन्या उमावि. पेटलावद में अंशकालीन स्वीपर के पद पर पदस्थ करवा दिया ओर पत्नी की तरह बहन को भी बाबू ने वर्ष 2011 में जनपद के फर्जी पत्र के माध्यम से कन्या उमावि. पेटलावद व कन्या उमावि. बामनिया दोनो स्थान पर एक ही आदेश से कलेक्टर दर पर कार्य करने की अनुमति का आदेश जारी करवा लिया। मामले में रमेश धानक द्वारा लिखित शिकायत भी की गई। शिकायत पर वेतन रोकने और उक्त फर्जी नियुक्ती के कर्मचारी से कार्य नही लेने तक आदेश जारी हुए, लेकिन बाबू की सेटिंग ऐसी की उक्त आदेश की धज्जिया उडाकर वर्ष 2018 में बाबू ने नियमो को ताक में रख बहन को भृत्या के पद पर मा.वि.गढ़ी पेटलावद में कार्य करने की स्वीकृति दिलवा दी, बाबू की कारस्तानी यही नही रुकी, वर्ष 2017 में बहन की पुत्री को कन्या शिक्षा परिसर में महिला चौकीदार के पद पर कलेक्टर दर पर पदस्थ करवा दिया और बाबू की पुत्री को भी कलेक्टर दर पर कन्या शिक्षा परिसर पेटलावद में रसोयन पद पर नियुक्ति करवा दी। बाबू का जलवा इसके बाद भी जारी रहा और खुद की एक ओर बेटी और बहन के जमाई को वर्ष 2019 में कलेक्टर दर पर कन्या शिक्षा परिसर पेटलावद में नोकरी पर सेट करवाने में कामयाब हो गए। उक्त नियुक्तियो में भारी अनियमितता हुई, जिसका भी खुलासा गूंज में किया जाएगा कि, कैसे नियमो को ताक में रखकर बाबू ने अपनी कारस्तानियो के साथ अपने परिवारजनों को नोकरीयो पर लगा दिया, ऐसा नही की ये ही करीबी रिश्तेदार नोकरी पर लगे हैं बाबू की एक और रिश्तेदार कन्या परिसर पेटलावद में अंशकालिन स्वीपर पद पर, एक पुत्री अंशकालिन स्वीपर पद पर आ.जा.कन्या छात्रावास पेटलावद में, एक पुत्री को अंशकालीन स्वीपर पद पर कन्या उमावि. पेटलावद, एक पुत्री अंशकालिन स्वीपर नेहरू कन्या छात्रावास पेटलावद में और बाबू की भाभीजी नेहरू कन्या छात्रवास में अंशकालिन स्वीपर पद पर पदस्थ हैं, बाबू की एक पुत्री फिलहाल करडावद क्षेत्र में अतिथि शिक्षक के रूप में कार्य कर चुकी हैं, अतिथि पद पर नियुक्ति के लिए बाबू ने अपने प्रभाव का उपयोग किया जो मामला विवादित भी रहा। बाबू सरकारी नोकरी में है लेकिन जानकारी के अनुसार बाबू की लगभग सात संताने है, जिसमे से 6 पुत्रियां हैं और अधिकांश पुत्रियां अब तक आदिवासी विकास विभाग का हिस्सा बन चुकी है। ये सभी बाबू के परिवार और करीबी है, जिनको धीरे-धीरे अंशकालिन से कलेक्टर दर ओर कलेक्टर दर से दैनिक वेतन भोगी से लेकर स्थाईकर्मी तक का सफर तय करवाया जाएगा ये भी तय माना जा रहा है। विभाग के अधिकारियों ने अपनी कारस्तानी छुपाने के लिए भले ही इन सब नियुक्तियो पर कोई सवाल नही खड़ा कर रहे हैं, लेकिन एक साथ थोक में हुई बाबू के परिवार के लोगो की भर्ती वो भी आदिवासी विकास विभाग में ही तो सवाल खड़े होना भी तय है कि, आखिर कैसे इतने लोग एक ही परिवार के नोकरी में लगे ? इस पूरे खेल में साठ-गाठ एवं प्रभाव के साथ बड़ी लेन-देन हुई है इससे भी इंकार नही किया जा सकता है। शिकायतो को निपटाने के लिए जिम्मेदारों ने तगड़ा माल भी वसूला होगा, जिसके बाद सभी प्रकार की जांच में भर्ती में हुई सेटिंग और लापरवाही पर पर्दा डाल दिया गया है और आज भी पर्दा ही डाला जा रहा है, लेकिन कहते हैं सच एक न एक दिन सामने आता ही है।

निरन्तर...

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई टाइटल कोड नंबर- एमपीएचआईएन-76422